वर्ष 47/अंक16/अगस्त-सितम्बर/2023/मासिक

दिल्ली शिक्षा

नए युग में

परीक्षा की प्रतीक्षा | आसान – विज्ञान

आधुनिक भूगोल प्रयोगशाला, एक आवश्यकता

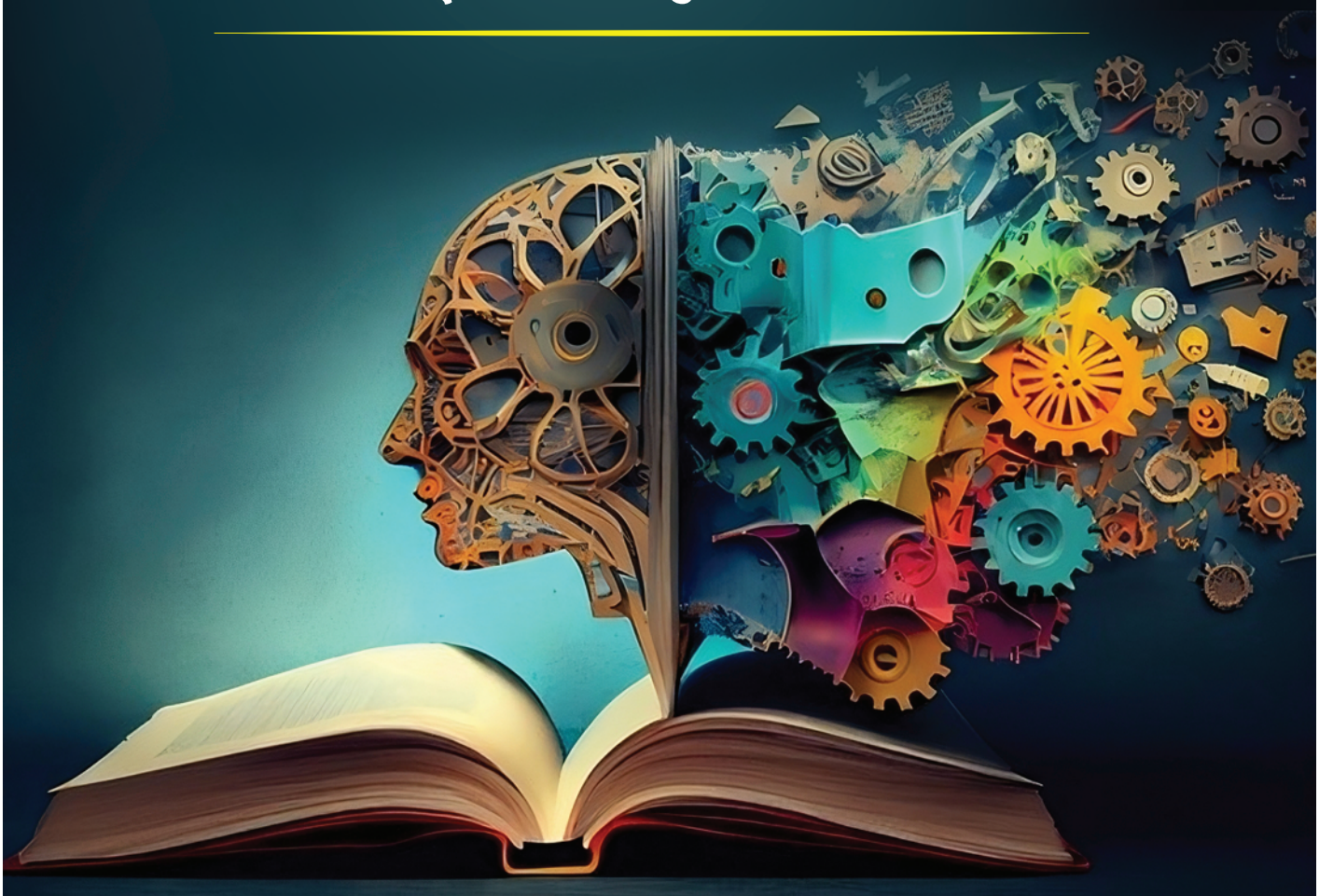

#Delhi Govt Schools Our stories on Social Media

Hon'ble CM @ArvindKejriwal along with Worthy Education Minister @AtishiAAP graced the occasion at a gala event to honour our proud #StateAwardees at Thyagraj Stadium

Edn Min @AtishiAAP & DE@gupta_iitdelhi wish Mentor Teachers @harish_iaf & @Bhavna-Sawnani joy in discovering and learning new things as they go on educational journey to the US for @FulbrightPrgrm

@arti_qanungo selected for #NationalTeachersAward 2023

#DelhiGovt-School had @LeeSatterfield , Assistant Secretary, ECA, USA, as the Special Visitor.

"The power of an alumni network is undeniable, providing support and opportunities for a lifetime" @sanjaysubhas1 , DDE, Exam ascertained and welcomed guests including Rufi Zaidi, #ProudAlumniOfDoE, her family, friends, school fraternity and officials from the department!

दिल्ली शिक्षा
नए युग में

विशेष आभार

अशोक कुमार, आईएएस
सचिव, शिक्षा विभाग

हिमांशु गुप्ता, आईएएस
निदेशक, शिक्षा निदेशालय

शैलेन्द्र शर्मा, शिक्षा सलाहकार

संपादक

डॉ बी पी पांडे, OSD, स्कूल ब्रांच

लेआउट डिजाइन

नवीन कुमार श्रीवास्तव
कलाध्यापक

समन्वय

कादंबरी लोहिया
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

संपादकीय मंडल

अक्षय कुमार दीक्षित
टी जी टी, हिंदी

भावना सावनानी
प्रवक्ता, जीव विज्ञान

डॉ नील कमल मिश्र
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान

रविंद्र कुमार
टी जी टी, प्राकृतिक विज्ञान

रोहित उपाध्याय
टी जी टी, गणित

सुमन रेलन
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी

विशेष सहयोग

अंकित सोलंकी
मो अहसान

अंदर के पन्नों पर

01 परीक्षा की प्रतीक्षा (विनय मालिक)

05 विद्यार्थी सलाहकार समिति: कल के भावी नेता (गोपाल लाल मीना)

09 आधुनिक भूगोल प्रयोगशाला, एक आवश्यकता (हयात धारीवाल)

12 मस्ती की पाठशाला और संस्कृतमय परिवेश (रेनू सिंह)

15 आसान – विज्ञान (हर्ष भारद्वाज)

18 विज्ञान पत्रिका "नई उड़ान" की यात्रा (सुमन रेलन)

21 अमृत उद्यान विद्यार्थियों की नजर से (सुबोध त्रिपाठी)

24 पाठ्येतर गतिविधियों की उपयोगिता (किरन गोस्वामी)

27 सोशल और इमोशनल लर्निंग (एस.ई.एल) (आशिमा गुप्ता)

30 दिल्ली का प्रोजेक्ट प्रतिभा (समरीन खान)

32 स्वच्छता रोज़ का त्योहार (रूचि वली)

34 रीड विद अ टीचर (मुरारी झा)

36 मेरा विद्यालय एक नई डगर पर (वीरभान सिंह)

38 एक विद्यालय ऐसा भी (दीपिका असवाल)

41 एलुमनाई टॉक शो (अनुराधा जैन)

44 शैक्षिक भ्रमण: शिक्षा के क्षेत्र में जुड़ते नए आयाम (मीनाक्षी झा)

परीक्षा की प्रतीक्षा

सितंबर का महीना दिल्ली में उमस भरी गर्मी तथा दिल्ली के विद्यालयों में परीक्षाओं का मौसम है। ऐसे में अपने नौ वर्षीय बेटे से मुझे यह सुनने को मिला कि अगर मैं चौथी क्लास में फेल हो गया तो...?

"रेखांकित करने वाली बात यह है कि हम दंपति शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हैं। बेटे से यह बात सुन मेरी हँसी छूट गई। उसकी परीक्षा के विषय में कोई भी गंभीर चर्चा या तैयारी के लिए हम दोनों ने ही अब तक कोई विशेष प्रयास नहीं किए हैं। हम सीखने-सिखाने के आनंद की बात करते रह गए और नौ वर्षीय यह बालक अपने बाहरी वातावरण से परीक्षा परिणाम की

विनय मालिक
प्रवक्ता, हिंदी
सर्वोदय बाल विद्यालय फतेहपुर बेरी

पारंपरिक अवधारणा को ले आया। बेटे की पास-फेल की संकल्पना को तो हमने घर में संबोधित कर लिया, किंतु कितने ही बच्चे और उनके अभिभावक इस प्रश्न को लेकर चिंतित रहते हैं।

इसी क्रम में मेरा चिंतन इस ओर भी गया कि सी.बी.एस.ई, एन.सी.ई.आर.टी. तथा एस.सी.ई.आर.टी. जैसे संस्थानों के मूल्यांकन से संबद्ध अनेक अनुसंधान व नीतियाँ समय-समय पर शैक्षिक जगत को जागरूक करती रही हैं। इसलिए इस लेख को एक कड़ी के रूप में देखा जा सकता है जो मूल्यांकन से संबद्ध इस विमर्श को जन-मानस, खासतौर से शिक्षक साथियों तक पहुँचा सके।

जब बच्चे विद्यालय आते हैं तब उनकी शिक्षा की औपचारिक शुरुआत होती है। विद्यालय में आने के पश्चात् आए दिन उनका 'परीक्षा' या 'क्लास टेस्ट ' जैसे शब्दों से सामना होता रहता है। इसके पश्चात् उनका सामना अंक, पास-फेल, फर्स्ट-सेकंड, ग्रेड, ग्रेस अंक, कंपार्टमेंट जैसे शब्दों से होता है। परीक्षा पढ़ाई का पर्याय बन जाती है। अतः मूल्यांकन पर विमर्श इस लेख का केंद्रीय बिंदु है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में मूल्यांकन हेतु दक्षता आधारित प्रश्न-पत्र आजकल चर्चा में हैं। इसी दिशा में दक्षता आधारित प्रश्न-पत्रों का निर्माण शुरू हो चुका है। आज 'परीक्षा' शब्द के विमर्श पर आमूल-चूल परिवर्तन की बात कही जा रही है।

परीक्षाएँ विद्यार्थियों में तनाव को जन्म न दें, वे परीक्षाओं से भयभीत न हों तथा उनके प्रदर्शन को परीक्षाएँ नकारात्मक रूप से प्रभावित ना करें, इसके लिए एन.सी.एफ.-2005 के माध्यम से शैक्षिक जगत में कुछ पहल की गई थी। आकलन विधियों को अधिक सहज किंतु चुनौतीपूर्ण और मज़ेदार बनाने के प्रयास भी किए गए थे। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) भी एक पड़ाव था। इस तरह के विचार और सुधार के प्रयास एक यात्रा हैं और शिक्षा जगत आज इस यात्रा में एक नए पड़ाव पर आ पहुँचा है।

इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों को अंकों से नापने का ना हो। मूल्यांकन की विधियों को ऐसा बनाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं कि विद्यार्थी परीक्षाओं की प्रतीक्षा करें। परीक्षाओं के माध्यम से सीखने में अपेक्षित सुधारों को जान सकें और कुछ नया सीख सकें। तात्पर्य यह कि परीक्षा भी उनके निरंतर सीखने का एक अवसर बने।

दक्षता आधारित प्रश्न पूछना इस बात की कसौटी सिद्ध होगी कि विद्यार्थियों का मूल्यांकन रटे हुए तथ्यों या स्मृति आधारित प्रश्नों पर ना होकर उनके वास्तविक जीवन से जुड़ा हो, उनके अनुभवों को अभिव्यक्त करता हो तथा वे अपने दैनिक जीवन की चुनौतियों के समाधान के लिए तैयार हो सकें।

विद्यार्थी ने परीक्षा से पूर्व एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा जारी किए गए सीखने के प्रतिफलों (LEARNING OUTCOME) के रूप में अब तक जो सीखा, वह विद्यार्थी में उपलब्धि की भावना लाए, उसे प्रोत्साहित करे, जिससे प्राप्त हुई सफलता से उसमें और अधिक सीखने की चाह उत्पन्न हो सके। इन प्रश्न-पत्रों का उद्देश्य केवल BLOOM's TAXONOMY में उल्लिखित LOW ORDER THINKING SKILL या HIGH ORDER THINKING SKILL के बीच की जद्दोजहद ना हो। प्रश्न-पत्र केवल सीखे गए विषय का मूल्यांकन नहीं करेगा अपितु सीखने के क्रम को आगे बढ़ाएगा। इस प्रकार के प्रश्न-पत्र पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों से इतर जीवन को नए नज़रिए से देखने का अवसर देते हैं।

उदाहरणार्थ:- कक्षा बारहवीं की वार्षिक बोर्ड परीक्षा-2023 में मनोविज्ञान विषय से दक्षता आधारित प्रश्न:- "नीरव के माता-पिता हाल ही में बेंगलुरु स्थानांतरित हुए हैं और उसे नए शहर में बसाने में व्यस्त हैं। नीरव को नागपुर के अपने दोस्तों की याद आती रहती है। इसका प्रभाव उसके शैक्षिक प्रदर्शन पर भी दिखाई देता है। इस दबाव का स्रोत क्या है? दबाव के अन्य स्रोतों का उल्लेख कीजिए।"

ऐसे प्रश्न पाठ्यपुस्तक में निहित ज्ञान को जीवन से जोड़ते हैं। ऐसे प्रश्न रटे-रटाए सिद्धांत या स्मृति आधारित उत्तर का मूल्यांकन नहीं करते हैं, अपितु इस समझ को स्थान देते हैं कि समक्ष आई चुनौती पर जीवन में विचार-विमर्श किस प्रकार किया जाना चाहिए।

उदाहरणार्थ:-कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तक से पूछा गया प्रश्न:-

"अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले- पाठ के आधार पर लिखिए कि समुद्र के गुस्से का क्या कारण था? उसने अपना गुस्सा कैसे व्यक्त किया?"

इसे इस प्रकार पूछा जा सकता है:-
"अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले- पाठ से उदाहरण देते हुए बताएँ कि मानव के स्वार्थ के कारण प्रकृति से की गई छेड़छाड़ के क्या परिणाम हो सकते हैं।"

उपरिलिखित दोनों प्रश्नों पर विचार करने पर यह रेखांकित किया जा सकता है कि अब ये स्मृति आधारित प्रश्न ना रहकर विद्यार्थी के दैनिक जीवन, परिवेश और अनुभवों से जुड़ जाते हैं। इनमें रटे हुए तथ्यों से अधिक, उनकी सामान्य समझ को ज्यादा स्थान प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार से पूछे गए प्रश्न हमारी भावी पीढ़ी को दैनिक चुनौतियों के प्रति नए चिंतन की ओर उन्मुख करते हैं।

ये आज की रटंत सूचना वाली शिक्षा से तो निजात दिलाते ही हैं, साथ ही संप्रेषण से एक कदम आगे आकर विद्यार्थियों के चिंतन को प्रभावी दक्षता की ओर ले जाते हैं। मूल्य आधारित प्रश्न, युग विशेष की परिस्थितियों के आकलन के साथ-साथ वैयक्तिक गुणों, क्षमताओं और अनुकूल या प्रतिकूल स्थितियों की चर्चा इस तरह करते हैं कि विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिल सके।

दक्षता आधारित प्रश्न असीम संभावनाओं को समेटे हुए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालयों में आयोजित होने वाली परीक्षाओं के लिए परीक्षकों को ऐसे अधिकाधिक प्रश्न-पत्रों का निर्माण करना होगा। साथ ही कक्षा शिक्षण में इन प्रश्नों को उचित मात्रा में स्थान भी देना होगा। एक प्रश्न-पत्र में यदि कुछ ही प्रश्न दक्षता आधारित हों तो वे भी सीखने की यात्रा में विद्यार्थी में सार्थक बदलाव सुनिश्चित कर सकते हैं।

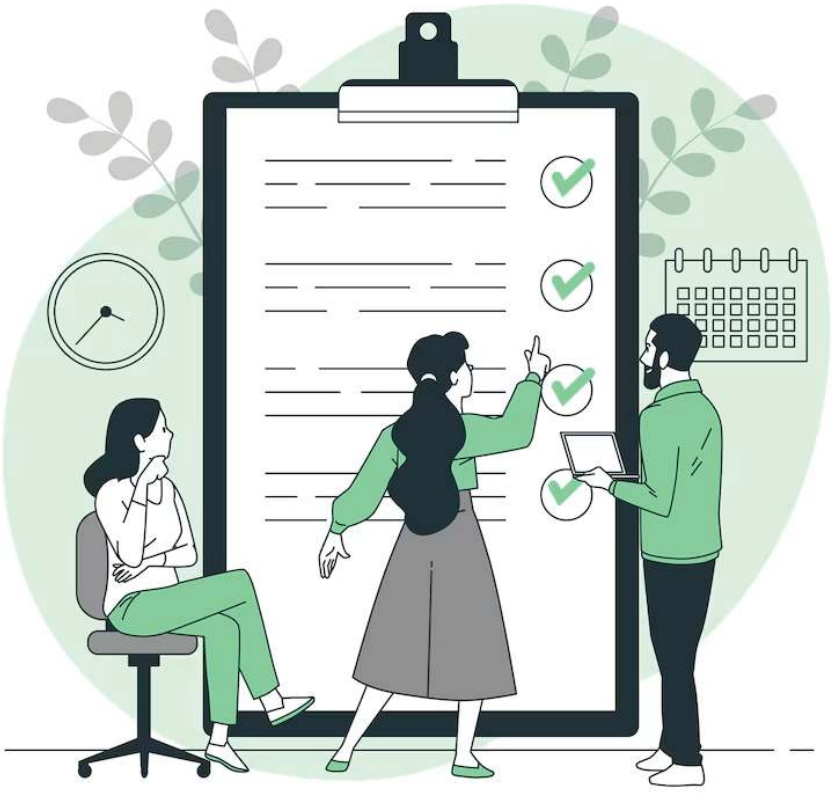

उत्साह और उल्लास का पर्व हो परीक्षा
शिक्षक और शिक्षार्थी सब करें जिसकी प्रतीक्षा !

गोपाल लाल मीना
(व्याख्याता कंप्यूटर विज्ञान)
आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय छतरपुर

विद्यार्थी सलाहकार समिति

"कल के भावी नेता"

आज विद्यालय में एक अलग ही माहौल है। सभी विद्यार्थियों के चेहरे पर खुशी नजर आ रही हैं। विद्यार्थी सलाहकार समिति के सदस्य पद के उम्मीदवार विद्यालय परिसर में अपना प्रचार-प्रसार करते हुए और अपनी उपलब्धियाँ गिनाते हुए नजर आ रहे हैं।

मतदान के दौरान कुछ बच्चे अपनी कनिष्ठा उंगली पर लगी नीली स्याही को निहार रहे हैं, तो कुछ बच्चे अपने मित्रों को मतदान करवाने में व्यस्त हैं। 82 सदस्यों के निर्वाचन के लिए लगभग 80 प्रतिशत से अधिक बच्चों ने मतदान किया। अंततः चुनावी प्रक्रिया समाप्त हुई। बच्चों में चुनाव परिणाम को जानने की उत्सुकता उनकी आँखों में देखी जा सकती थी। इस चुनाव प्रक्रिया को बच्चों ने खूब इन्जॉय किया और सामाजिक विज्ञान और राजनीतिक विषय के कई टॉपिक भी क्लियर हुए।

यह चुनाव था विद्यार्थी सलाहकार समिति के सदस्यों को चुनने का। शिक्षा विभाग, दिल्ली के द्वारा दिनांक 2 सितंबर 2022 को एक सर्कुलर जारी किया गया था, जिसमें दिल्ली सरकार के 20 चयनित विद्यालयों में विद्यार्थी सलाहकार समिति का गठन कर विद्यालय के शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की भूमिका सुनिश्चित की गई थी।

मार्च 2023 में विभाग के द्वारा इस पायलट प्रोजेक्ट का अवलोकन किया गया जिसमें पाया गया कि यह प्रोजेक्ट विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक है। अंततः विभाग द्वारा निदेशालय के सभी स्कूलों में "विद्यार्थी सलाहकार समिति" के गठन का फैसला किया गया।

विद्यालय प्रमुख श्री मनदीप जी ने 'विद्यार्थी सलाहकार समिति' का उत्तरदायित्व सँभालने के लिए मुझपर भरोसा किया और मैं इसे सफल बनाने के कार्य में जुट गया।

25 जुलाई 2023 को मैने मॉर्निंग असेंबली में विद्यार्थियों को संबोधित किया, जिसमें बोर्ड के गठन, बोर्ड की जिम्मेदारियाँ और बोर्ड के सदस्यों की चयन प्रक्रिया के संबंध में जानकारी प्रदान की और उनसे अपील की एक ईमानदार, जिम्मेदार, कर्मठ और श्रेष्ठ विद्यार्थी का अपने नेता के रूप में चयन करें।

इसके बाद विद्यालय में कार्यरत सभी शिक्षकों के साथ आदरणीय विद्यालय प्रमुख की उपस्थिति में हमने एक मीटिंग का आयोजन किया जिसमें चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाने, सभी विद्यार्थियों को इस चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने और मतदान के दिन अधिक से अधिक विद्यार्थीयों की उपस्थिति सुनिश्चित करने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर बात की।

सभी शिक्षाकों और विद्यालय प्रमुख की सहमति से "विद्यार्थी सलाहकार समिति" के सदस्यों के निर्वाचन हेतु 28 जुलाई 2023 को मतदान दिवस के रूप में निर्धारित किया गया। इस चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी और निरपेक्ष बनाने के लिए कक्षा 7, 8, 9 और 11 के सभी सेक्शनों में मतदान के संचालन और गोपनीयता बनाए रखने हेतु निरीक्षण ऑफिसर्स की ड्यूटी लगाई गई।

"विद्यार्थी सलाहकार समिति" के सदस्यों के निर्वाचन हेतु विद्यालय प्रमुख की सदस्यता में मतदान दिवस से पहले एक बार फिर स्टाफ मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें कक्षा 7, 8, 9 और 11 के सभी पोलिंग ऑफिसर्स को मतदान के लिए चुनाव सामग्री (मतदान बॉक्स, वोटर स्लिप, सर्टिफिकेट्स के फॉर्मेट, चॉक, आदि) उपलब्ध कराए गए।

इस मीटिंग में यह भी निर्देश दिए गए कि सभी शिक्षाक अपने विद्यार्थियों को चुनाव आयोग, संविधान, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था आदि टॉपिक्स को "स्टूडेंट एडवाइजरी बोर्ड" की चुनाव प्रक्रिया से लिंक कर, माइंड मैपिंग, ग्रुप एक्टिविटी आदि के माध्यम से पढ़ाने का प्रयास करें जिससे बच्चे सामाजिक ढ़ाँचे को समझ सके।

इसके बाद मतदान का दिन आया जिसके बारे में आप पढ़ ही चुके हैं। मतदान का परिणाम दो दिन के बाद घोषित किया जाना था। 2 दिन का अवकाश काटना बच्चों के लिए बड़ा ही मुश्किल था। अगले कार्य-दिवस पर कक्षा में "विद्यार्थी सलाहकार समिति" के नवनिर्वाचित सदस्यों का परिणाम सुनाया गया। नव निर्वाचित सदस्यों की आँखों में जिम्मेदारी के भाव और जीत की खुशी देखी जा सकती थीं।

आदरणीय विद्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में "विद्यार्थी सलाहकार समिति" के नवनिर्वाचित सदस्यों की मीटिंग का आयोजन किया गया। इस मीटिंग के दौरान मैंने महसूस किया कि सभी विद्यार्थी बड़ी ही जिम्मेदारी के साथ बैठे हुए हैं और मेरी और प्रधानाचार्य की बातों को बहुत ही ध्यान से सुन रहे हैं। ऐसा लग रहा था जैसे विद्यार्थी किसी भी तरह की जिम्मेदारी को लेने के लिए तैयार है।

इस मीटिंग में यह सुनिश्चित किया गया कि अगली मीटिंग में सभी नवनिर्वाचित सदस्य मिलकर अपने दो ईमानदार, जिम्मेदार, कर्मठ और श्रेष्ठ जनरल सेक्रेटरी का चुनाव करेंगे। विद्यार्थी सलाहकार समिति के नवनिर्वाचित सदस्यों ने बड़ी ही सूझबूझ और समझदारी से जनरल सेक्रेटरी के चुनाव में कक्षा 11 से अपने दो योग्य जनरल सेक्रेटरी का चुनाव किया।

विद्यार्थी सलाहकार समिति के गठन के बाद विद्यालय परिसर में सभी शिक्षकों और विद्यालय प्रमुख की उपस्थिति में समिति के सभी नवनिर्वाचित सदस्यों और दोनों जनरल सेक्रेटरी को सत्य निष्ठा और समिति के प्रति जिम्मेदारी के संबंध में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। विद्यालय के शैक्षणिक, खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की भूमिका सुनिश्चित करने के लिए जनरल सेक्रेटरी की अध्यक्षता में सभी नवनिर्वाचित सदस्यों से विभिन्न उप-समितियाँ का गठन किया गया।

विद्यालय की 'विद्यार्थी सलाहकार समिति' उस दिन से आज तक स्कूल की हर छोटी-बड़ी गतिविधि में उत्साह और लगन से भाग ले रही है। विद्यार्थी सलाहकार समिति के सभी सदस्य विद्यालय के सभी क्षेत्रों जैसे; मॉर्निंग असेंबली, डिसिप्लिन ड्यूटी, स्पोर्ट्स, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में उल्लेखनीय और सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

समिति के सभी सदस्यों ने अन्य विद्यार्थियों के साथ मिलकर स्वतंत्रता दिवस पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, हिंदी भाषण, पेंटिंग, इंग्लिश स्पीच, कविता वादन, और देशभक्ति गीत गायन, नाटक आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सब ने मिशन मून : चंद्रयान-3 पर भी विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिनमें पेंटिंग्स, इंग्लिश स्पीच, हिंदी भाषण, देशभक्ति गीत गायन, क्विज कंपटीशन आदि महत्वपूर्ण हैं।

उन्होंने शिक्षक दिवस पर विभिन्न तरह के कार्यक्रमों को आयोजित किया। इन कार्यक्रमों में गुरु वंदना, शिक्षक पर संदेश, सभी शिक्षकों के लिए उपहार, हिंदी भाषण और अंग्रेजी भाषण, शिक्षा का महत्व- नाटक आदि प्रमुख हैं।

'विद्यार्थी सलाहकार समिति' के गठन से बच्चों में सद्भावना, भाईचारा, मित्रता आदि का माहौल बन रहा है।

बच्चे समिति के सदस्यों के माध्यम से अपनी चुनौतियों को स्वयं ही सुलझा रहे हैं। समिति के सदस्यों में जिम्मेदारी और निष्ठा की भावना विकसित हो रही है और उनमें स्व-अनुशासन बढ़ रहा है।

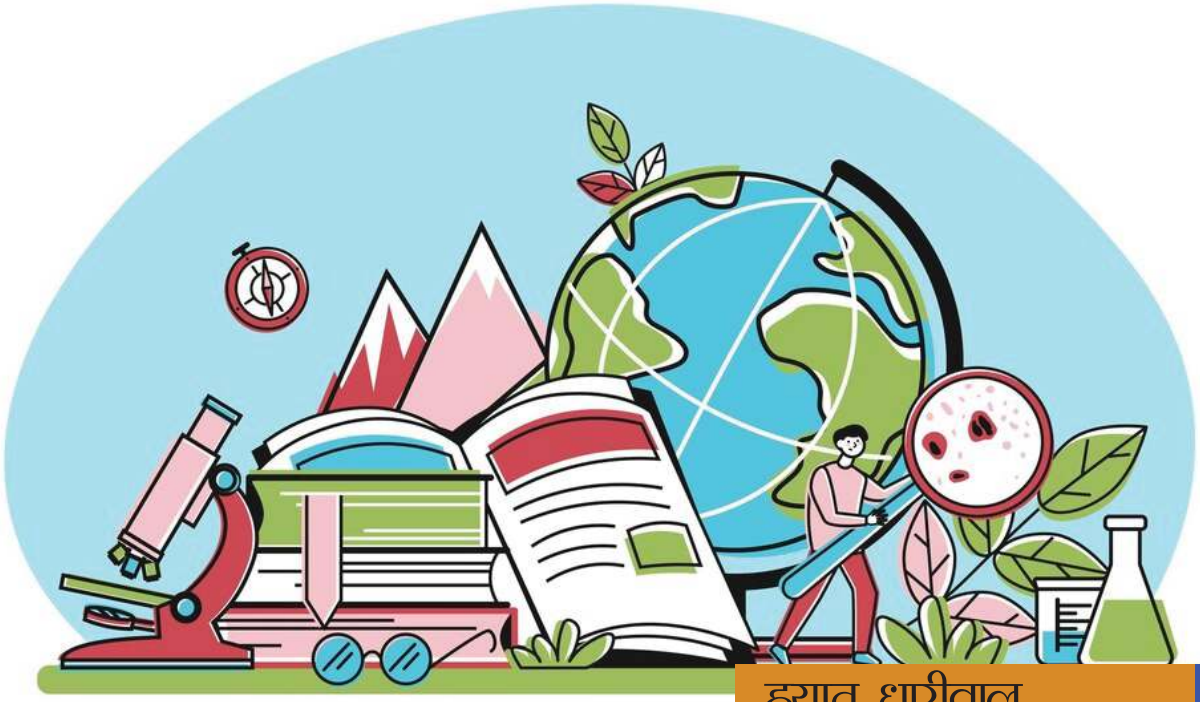

हयात धारीवाल
प्रवक्ता भूगोल, BNSKV
जौनापुर

आधुनिक भूगोल प्रयोगशाला, एक आवश्यकता

आज, शिक्षा में 21st सेंचुरी स्किल्स को ले कर कई नये प्रयोग किए जा रहे हैं। जहाँ स्कूलों में विज्ञान, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, गणित (STEM) आदि विषयों के लिए विशेष प्रयोगशालाओं की योजनाओं पर काम चल रहा है, वहीं भूगोल की प्रयोगशालाओं को पुनर्गठित करने के लिये भी हाल ही में शिक्षा निदेशालय द्वारा कई दिशा निर्देश जारी हुए। कुल 397 सरकारी स्कूल चुने गए जहाँ पर भूगोल की प्रयोगशाला पुनर्गठित की जायेंगी। इन्ही में से BNSKV जौनापुर भी एक है।

भूगोल प्रयोगशाला को एक ऐसी प्रयोगशाला के रूप में पुनर्गठित किया गया है, जिसमें विषय से संबंधित सभी लिखित, श्रव्य और दृश्य सामग्री है। भूगोल प्रयोगशाला एक छात्र के भौगोलिक आधार की समझ को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यह सीखने का एक आवश्यक हिस्सा हैं जो छात्रों को अनुशासनात्मक उपक्षेत्रों - भौतिकी, मानव और प्रकृति-समाज के रूप में जोड़ता है।

कई बार भूगोल की जटिलताओं को वास्तव में समझने के लिए व्यावहारिक अनुभव की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि हमने भूगोल सीखने की प्यास पैदा करने के लिए एक अद्वितीय स्थान की संकल्पना की- एक ऐसा स्थान जहाँ छात्र भौतिक और सामाजिक विज्ञान में खुद को डुबो सकते हैं जो इस बहु-विषयक विषय में एकीकृत हो सकते हैं।

प्रयोगशाला मानचित्रों, स्थलाकृतिक शीटों और ट्रेसिंग टेबल, थर्मामीटर, बैरोमीटर, चुंबकीय कंपास, इलेक्ट्रिक ग्लोब, एनेमोमीटर, विंड वेन, मानक समय संकेतक और गीले और सूखे बल्ब थर्मामीटर जैसे विभिन्न सर्वेक्षण उपकरणों की एक शृंखला से सुसज्जित है। लैब में विभिन्न विषयों से संबंधित सीडी भी हैं। नेट पर उपलब्ध ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम और भौगोलिक सूचना प्रणाली की मदद से किसी स्थान विशेष के तथ्यों का अध्ययन करने और भौतिक परिवर्तनों के बारे में जानकारी देने के लिए समूची जानकारी यहाँ उपलब्ध है। यहाँ पर छात्रों के लिए वर्चुअल फील्ड यात्राएँ भी आयोजित की जा सकती हैं। इससे छात्र राज्यों, देशों, समुद्र आदि के सटीक स्थान के बारे में जानेंगे।

भूगोल केवल पाठ्यपुस्तकें पढ़ने और तथ्यों को याद रखने तक ही सीमित नहीं है। यह एक आकर्षक विषय है। भूगोल हमारे चारों ओर है, जिस भूमि पर हम खड़े हैं, हमारे पैरों के नीचे की चट्टानों से लेकर हमारे चारों ओर के मौसम के पैटर्न से होते हुए आकाश में बादलों तक।

इन अति आधुनिक प्रयोगशालाओं में कई मूलभूत अवधारणाओं को समझ के साथ पढ़ाना रोचक और आसान हो गया है। भूगोल अब केवल मानचित्रों और ग्लोब के सहारे नहीं बल्कि व्यावहारिक ज्ञान की अवधारणाओं पर शोध कर के किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की प्रक्रिया है।

छोटी कक्षाओं में छात्रों को सामाजिक अध्ययन के एक भाग के रूप में भूगोल से परिचित कराया जाता रहा है, जो हमेशा विषय की वैज्ञानिक जड़ों के साथ न्याय नहीं करता। परिणामस्वरूप, छात्रों को अकसर भौतिक भूगोल की अवधारणाओं, जैसे चट्टानें, मिट्टी और जल चक्र, को समझने में कठिनाई होती है। लेकिन अब इन नवपुनर्गठित लैब में उन्हें चित्र और रेखाचित्र दिखाए जा सकते हैं। प्राकृतिक घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखने और अनुभव करने के अवसर के बिना, सीखना अधूरा रहता, लेकिन इन लैब्स में AI तकनीक से इनकी कल्पना करना अब आसान हो गया है।

को देखकर और छूकर उनकी विशेषताओं को समझना, दोनों में बहुत अंतर है। इसी प्रकार, छात्रों को मिट्टी में भिन्नता को समझने के लिए विभिन्न प्रकार की मिट्टी की बनावट को महसूस करना चाहिए और उनके रंगों का निरीक्षण करना चाहिए। उन्हें अनुभव करना चाहिए कि जब विभिन्न प्रकार की मिट्टी में पानी मिलाया जाता है तो क्या होता है।

भूगोल प्रयोगशाला अब एक ऐसा स्थान बन गया है जो छात्रों को अनुभव से सीखने का अवसर प्रदान कर रहा है, जिससे विषय अधिक रोचक और जीवंत हो गया है। सीखने के व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ, छात्र विभिन्न मिट्टी की बनावट को महसूस कर सकते हैं, उनके रंगों का निरीक्षण कर सकते हैं और हमारे ग्रह की सतह को बनाने वाली विविधताओं को भी समझ सकते हैं।

प्रयोगशाला में, छात्रों को मॉडल और शिक्षण सहायक सामग्री बनाने के लिए पुनर्नवीनीकरण या टिकाऊ सामग्रियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। छात्र क्षेत्र से चट्टान, मिट्टी और पौधों के नमूने भी एकत्र करते हैं, जिनका उपयोग प्रयोगशाला में अवलोकन के लिए किया जाता है।

विभिन्न चट्टानों के चरित्र का पुस्तक से अध्ययन करना और विभिन्न प्रकार की चट्टानों

ऐसी अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से सीखना अधिक प्रभावी बनता हैं।

विद्यार्थिओं को यहाँ स्वयं के मानचित्र और ग्लोब बनाने के लिए जगह मिलती है। वे उनको समतल जमीन पर फैलाते हैं। लटके हुए मानचित्र को देखने के बजाय कई प्रकार के मानचित्रों के साथ खेलते हैं। जब वे पुनर्चक्रित सामग्रियों से अपना स्वयं का ग्लोब और भूमध्यरेखीय तल बनाते हैं तो अक्षांश और देशांतर की अवधारणाएँ आसानी से समझ आ जाती हैं।

इस पूरी प्रक्रिया में एक टीचर-फैसिलिटेटर के रूप में मैं भी अपनी भूमिका तलाश पायी, एक शिक्षक के लिए यह बेहद संतोषजनक है।

रेनू सिंह
TGT संस्कृत
स्कूल ऑफ़ एक्सीलेंस, मदनपुर खादर

मस्ती की पाठशाला और संस्कृतमय परिवेश

संस्कृत एक महत्वपूर्ण भाषा है जिसमें साहित्य, दर्शन, गणित और विज्ञान जैसे क्षेत्रों के विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथों को लिखा गया है। संस्कृत भाषा के महत्व को समझाने और इसे संरक्षित करने के लिए दिल्ली के विद्यालयों में विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की जाती रही हैं। जैसे संस्कृत सप्ताह, सेमिनार, कार्यशालाएँ, शैक्षिक भाषण और व्याख्यान। नई शिक्षा नीति 2020 में भी यह कहा गया है कि स्कूली शिक्षा में संस्कृत भाषा को मुख्य भाषा के रूप में लागू किया जाएगा।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दिल्ली सरकार द्वारा गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के लिए मस्ती की पाठशालाओं में दिल्ली संस्कृत अकादमी के सहयोग से दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर संस्कृत भाषा पर आधारित कुछ गतिविधियों को शामिल किया गया। इन कार्यशालाओं में योग, नृत्य, संगीत, थियेटर और क्राफ्ट आदि गतिविधियाँ भी शामिल थी ।

"आओ, कुछ नया सीखें", यही उद्देश्य था इन कार्यशालाओं का। एक महत्वपूर्ण बात ये थी कि यह कार्यशालाएँ सिर्फ़ सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए नहीं, अपितु सभी स्कूली बच्चों के लिए समान रूप से उपलब्ध थीं। रेडियो, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से इनका समुचित प्रचार भी किया गया।

मुझे, अवसर मिला राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, लाजपत नगर के बच्चों को व्यावहारिक संस्कृत संभाषण सिखाने का। मन में एक आशंका भी थी, कि गर्मी की छुट्टियों में बच्चे इन कक्षाओं में आयेंगे भी या नही। पर जब मस्ती की पाठशाला शुरू हुई तो पहले ही दिन से बच्चों का उत्साह देखने लायक था। क्लास की शुरुआत हर दिन एक नए संस्कृत गीत से होती जिसे सभी बच्चे पूरे मन से गाते। हर दिन एक नई गतिविधि के माध्यम से संस्कृत में संख्या, दिवस, शरीर के अंगों के नाम, अव्यय, क्रिया, फलों एवं फूलों के नाम, दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले शब्दों आदि का परिचय कराया जा रहा था। बच्चे इन गतिविधियों को बड़े ही जोश और उत्साह के साथ कर रहे थे।

एक गतिविधि का वीडियो माननीया शिक्षा मंत्री आतिशी महोदया ने भी देखा और प्रशंसा भी की। जैसे जैसे मस्ती की पाठशाला आगे बढ़ रही थी, बच्चों का जोश भी बढ़ता जा रहा था। पूरी दिल्ली में चर्चा हो रही थी, इन कक्षाओं की।

एक दिन अचानक देश के प्रतिष्ठित न्यूज़ चौनल 'आजतक' की टीम हमारे बच्चों से मिलने विद्यालय में आ गई।

टीम यह देखकर हैरान थी कि गर्मी की छुट्टियों में जब सब बच्चों को इंतजार रहता है घूमने जाने का तब ये बच्चे इतनी लगन से संस्कृत संवाद सीख रहे हैं। कक्षा में बच्चों की उपस्थिति भी शत प्रतिशत थी। टीम ने बच्चों से बातचीत की। सभी बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए। साथ ही, जो भी "मस्ती की पाठशाला" में सीखा वह भी बताया। सभी बच्चे संस्कृत में ही अपना परिचय दे रहे थे। दसवीं की छात्रा मुनावरा ने बताया कि जब से मैंने इन कक्षाओं में आना शुरू किया तब से संस्कृत के प्रति मेरा रुझान बढ़ गया है।

करण ने कहा कि मुझे नही पता था, कि संस्कृत को खेल खेल में भी सीखा जा सकता है। एक और छात्रा कोमल ने, आज तक की टीम को बताया कि इन कक्षाओं में जो सीख रहे हैं उससे उनके बोर्ड रिजल्ट में भी सुधार होगा, अब संस्कृत नीरस नही लगती। बच्चों ने दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले श्लोक और मंत्र भी सुनाए, जो उन्होंने मस्ती की पाठशाला में सीखे थे। आज तक की टीम ने बच्चों की लगन और उत्साह की बहुत सराहना की।

15 दिनों तक चली इस मस्ती की पाठशाला के अंतिम दिन समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने संस्कृत में समूह गीत, एकल गीत प्रस्तुत किए और अपने अनुभवों को साझा किया, साथ ही दिल्ली सरकार और दिल्ली संस्कृत अकादमी को इस मस्ती की पाठशाला का आयोजन करने लिए धन्यवाद दिया, मस्ती की पाठशाला को लेकर मेरा अनुभव भी अविस्मरणीय रहा।

इन कक्षाओं से प्रेरित होकर मैंने अपने चारों मेंटी स्कूल्स (GGSSS & GBSSS ताजपुर पहाड़ी और GGSSS No 3, GBSSS No 2 बदरपुर) में संस्कृतमय परिवेश बनाने का निर्णय लिया। कहते हैं, कि परिवेश बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करता है और सीखने सिखाने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा भी है। इसके लिए सभी संस्कृत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं से बात की गई और चर्चा हुई कि हम कैसे अपने स्कूल में संस्कृतमय परिवेश बना सकते हैं, जिससे बच्चों का रुझान इस भाषा के प्रति बढ़े। सभी ने चर्चा कर ये निर्णय लिया कि-

1- विद्यालय में हर कक्ष का नाम संस्कृत में भी होगा।
2- बच्चों की संस्कृत की नोटबुक में नेम स्लिप संस्कृत में होगी।
3- प्रार्थना सभा में संस्कृत श्लोकों और सूक्तियों का वाचन।
4- कक्षा में बच्चों की उपस्थिति भी संस्कृत में होगी।

सभी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं ने अपनी अपनी कक्षा में बच्चों को नेम स्लिप दी और बच्चों ने बड़े उत्साह से उन्हें अपनी नोटबुक पर सजाया।

"भाष्यते इति भाषा" अर्थात भाषा वही है जो बोली जाए, इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए इन शिक्षक शिक्षिकाओं ने संस्कृत कक्षा में संस्कृत में बोलने का निर्णय लिया और बच्चों को छोटे छोटे संस्कृत वाक्यों के माध्यम से अभ्यास कराया ताकि संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों के नज़रिए में बदलाव आए। वे इस भाषा को जान सकें और इसकी उपयोगिता एवं महत्व से परिचित हो सकें। आज आलम यह है कि इन विद्यालयों के हर एक कोने में आपको संस्कृत के स्टीकर देखने को मिलेंगे और पूरा विद्यालय संस्कृतमय हो चुका है।

छोटे छोटे प्रयास ही बदलाव की एक नई कहानी गढ़ते हैं। आशा है कि शिक्षकों के इन प्रयासों को देखकर अन्य शिक्षक भी निश्चित रूप से प्रेरित होंगे और अपने विद्यालय में संस्कृतमय परिवेश का निर्माण करेंगे।

हर्ष भारद्वाज
टी जी टी विज्ञान
RSBV किरन विहार

आसान – विज्ञान

आज टेक्नोलॉजी में दुनिया में हम अपना नाम स्थापित कर चुके हैं। कारों से लेकर जेट्स तक, फ़ोन में इस्तेमाल होने वाली छोटी सी चिप से लेकर बड़े बड़े एयरक्राफ्ट कैरियर तक, सब यहाँ हमारे देश में बन रहे हैं। और ये सब संभव हो पा रहा है विज्ञान को समझकर उसे हमारे रोजमर्रा के जीवन तक लाने वाले साइंटिस्ट्स की मेहनत के कारण।

मैं खुद, एक विज्ञान का अध्यापक हूँ और मेरी विज्ञान में रुचि है, शायद इसलिए मुझे हमेशा ही यह आसान लगता रहा, लेकिन मैं यह बात कक्षा 6 से 10 तक पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों के बारे में नहीं कह सकता। ज्यादातर विद्यार्थियों के लिए विज्ञान मात्र एक कठिन विषय ही रहा है, इसमें पास होने लायक अंक लाना और 11वीं कक्षा में इस से छुटकारा पाना उनका एकमात्र लक्ष्य प्रतीत होता है।

विद्यार्थियों को विज्ञान सिखाते समय बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। विज्ञान में जिज्ञासा की कमी विद्यार्थियों में अरुचि पैदा करती है। विद्यार्थी विज्ञान के दैनिक जीवन से जुड़ाव को समझ नहीं पाते।

इस विषय के प्रति विद्यार्थियों के रूखे व्यवहार से मेरा मन बहुत व्यथित रहता था। विज्ञान मात्र एक विषय नहीं अपितु जीवन जीने की शैली है। विज्ञान वह जरिया है जिसने मानव जीवन को सरल एवं सुगम बनाया है। विज्ञान जीवन के हर कण में रचा बसा है तो विद्यार्थी कैसे इस विषय से जुड़ पायें, यह सवाल अकसर मुझे परेशान करता रहा। मैंने मन में बस ठान लिया था कि विज्ञान शिक्षण को किसी भी तरह इतना रुचिकर बनाना

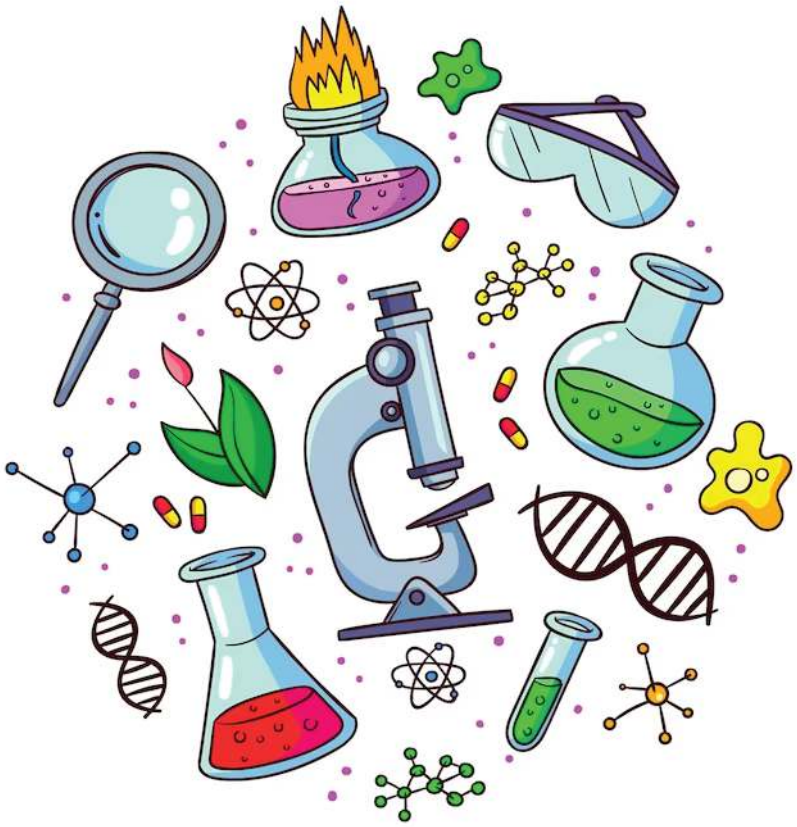

है कि विद्यार्थी न सिर्फ दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता को अनुभव कर सकें बल्कि विज्ञान के क्षेत्र में करियर चुनकर स्वयं की तथा देश की प्रगति में हिस्सेदार बनें।

कक्षा में उत्सुकता की कमी विज्ञान शिक्षण में सबसे बड़ा अवरोध साबित हो रही थी। विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुझान नजर नहीं आ रहा था। क्यों, कब, कैसे जैसे प्रश्न सुनने को मेरे कान तरस गए थे। मन में विचार आया कि विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा पैदा करना आवश्यक है। जब तक विद्यार्थी विज्ञान नामक इस मजेदार प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बनेंगे तब तक उन्हें सिखा पाना मुश्किल होगा। विज्ञान में विद्यार्थियों की रुचि और जिज्ञासा पैदा करने के लिए विषय को आसान बनाना और उसे उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना जरूरी था। उद्देश्य यह था कि छात्र विज्ञान को दैनिक जीवन में अनुभव कर सकें और जीवन में विज्ञान के महत्त्व को समझ सकें। यह विचार आते ही मैंने उस दिशा में कार्य करना शुरू कर दिया। ज़रूरत थी, बस शिक्षण शैली में में थोड़ा बदलाव करने की।

किताबों में लिखी कठिन शब्दावली विद्यार्थियों को विज्ञान से दूर कर रही थी इसलिए सबसे पहला लक्ष्य भाषा को आसान करना था। भाषा किसी भी विषय के शिक्षण को आसान बना देती है और यह सामने वाले के साथ जुड़ने का सबसे अच्छा माध्यम भी है।

छात्रों को उनके स्तर पर जाकर सिखाना मेरा पहला कदम था इसलिए छात्रों के दैनिक जीवन से जुड़े छोटे छोटे उदाहरणों के द्वारा विज्ञान के कांसेप्ट जैसे कि न्यूटन के नियम, गुर्त्वाकर्षण का प्रभाव तथा हवा का दबाव आदि विषयों को समझने का प्रयास किया। विद्यार्थी खेल खिलौनों से जल्दी सीखते हैं तो कुछ ऐसे खिलौने बनाये जो विज्ञान से जुड़े कॉन्सेप्ट्स को आसानी से दिखा पाये।

सभी छात्रों को रोजाना विज्ञान प्रयोगशाला में ले जाना संभव नहीं था तो सोचा क्यों न प्रयोगशाला को ही कक्षा में लें आएं। सो, जरूरी सामान इकट्ठा करके एक किट बनाई जिसे कक्षा में ले जाना शुरू किया। इस किट में प्रयोग किए जाने वाला सामान ऐसा था जो आसानी से किसी को भी उपलब्ध हो तथा विद्यार्थी भी आवश्कता पड़ने पर उस समान को घर पर इकठ्ठा कर पाएं।

विज्ञान और दैनिक जीवन आपस में ऐसे जुड़े है जैसे ताला और चाबी। दैनिक जीवन की समस्या ताले के सामान है और विज्ञान उसकी चाबी। विद्यार्थियों को बस यही बात तो समझानी थी। आग लगने की स्थिति में नीचे रेंग कर जाना, जान बचने का एक तरीका होता है, यह समझने के लिए घरेलू सामान की मदद से एक एक्सपेरिमेंट किया और दिखाया कि भारी होने के बावजूद गर्म कार्बन डाई ऑक्साइड कमरे में ऊपर की ओर इकट्ठा हो जाती है और नीचे ऑक्सीजन की साँस लेने लायक मात्रा उपस्थित होती है। फिर तो मानो विद्यार्थियों पर विज्ञान का जादू सर चढ़कर बोलने लगा। इस तरह धीरे धीरे, विद्यार्थिओं ने स्वयं ही दैनिक जीवन के विज्ञान को प्रयोग में लाना शुरू कर दिया। इससे उनके सोचने के तरीके, व्यवहार एवं कार्य करने के तरीको में बदलाव नजर आना शुरू हो गया।

विद्यालय में शनिवार का दिन विज्ञान संसद के रूप में निर्धारित किया गया जिसमें विद्यार्थी न सिर्फ विज्ञान चर्चा करते अपितु अपनी बातों को सिद्ध करने के लिए DIY (do it yourself) प्रोजेक्ट / एक्टिविटी भी करने लगे। सोच में एक छोटा सा बदलाव बड़ा कारनामा कर सकता है इस बात पर विश्वास होने लगा जब बच्चे विज्ञान से प्यार करने लगे। दैनिक जीवन में इसका महत्त्व समझने और समझाने लगे। विद्यार्थियों के रवैये में बदलाव देखने को मिला और आसान विज्ञान की शुरुआत होने लगी।

सुमन रेलन
प्रवक्ता, अंग्रेज़ी
GGSSS B1, वसंत कुंज

विज्ञान पत्रिका "नई उड़ान" की यात्रा

विज्ञान हो और नवाचार न हों, यह मुमकिन नहीं है। विज्ञान की समझ को विशेष ज्ञान से जोड़ा जाता है, और यह अपेक्षित ही है कि यहाँ नित नये प्रयोग हों।

नई उड़ान, त्रैमासिक ई-पत्रिका, का उद्भव, एक ऐसे ही नवाचार के रूप में हुआ। चर्चा का विषय था, विज्ञान शाखा, शिक्षा निदेशालय से एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाये जो दिल्ली शिक्षा के मूल स्वरूप को दिखाने के साथ साथ विज्ञान विषय को प्रासंगिक एवं प्रामाणिक रूप में अपने पाठकों के बीच ले जाये।

तात्कालिक शिक्षा निर्देशक के मार्गदर्शन में एक कोर टीम का गठन हुआ, जिनमें तात्कालिक डीडीई, ओएसडी, प्रधानाध्यापक और मेंटर टीचर्स थे। "नई उड़ान", नाम के चयन के साथ ही मैगज़ीन के स्वरूप की चर्चा होने लगी। मुख्यतः तीन आयाम थे, स्टूडेंट्स की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना, टीचर्स और स्टूडेंट्स के नवाचारों को स्थान देना और विश्वभर में नवीनतम तकनीकी जानकारियों को साझा करना।

सम्पादकीय

नई उड़ान

हर तिमाही संस्करण का एक स्पेशल थीम रखा जाता है, जैसे जैव विविधता, ग्लोबल वार्मिंग, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत, सिंगल यूज़ प्लास्टिक आदि; जिसके इर्द गिर्द टीचर्स, स्टूडेंट्स, प्रधानाध्यापक, ऑफ़िसर्स, अलुमनी स्टूडेंट्स अपनी प्रविष्टि भेजते हैं।

अपने पहले ही संस्करण में नई उड़ान ने पाठकों से काफ़ी वाहवाही बटोरी। हमारी पहली प्रविष्टि The Exciting World of Human Gene Therapy, डॉ उज्ज्वल राठौड़, अलुमनी स्टूडेंट, RPVV, सूरजमल विहार, के साथ शुरू हुआ यह सफ़र, नवोन्वेषण नवाचारों की कहानियाँ कहता हुआ कभी "फिक्शन स्टोरी" तो "कभी पुस्तक समीक्षा" के पड़ाव से होते हुए "एक विद्यालय, ऐसा भी" के द्वारा दिल्ली के उच्च स्तरीय स्कूल मॉडल की सैर कराता है। यहाँ तकनीकी जानकारियाँ भी हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए खेल खेल में सीखने के गुर भी।

Vision Quest- 2nd Episode

जिज्ञासा की ज़मीन पर खिलते

जीवन के अनेक रंग

VISION QUEST

नई उड़ान की इस सफलता ने कोर टीम को काफ़ी उत्साहित कर दिया और अब टीम अपनी इस उड़ान में नये पंख जोड़ने के आयाम तलाशने लगी।

टीम साईंस, और नित नये प्रयोग! यह तो अपेक्षित ही था। मैडम ज़रीन ताज, एडिशनल डायरेक्टर, ने एक ऐसे प्लेटफार्म का प्रस्ताव रखा, जहाँ स्टूडेंट्स सीधे सीधे अपने किसी "आदर्श" के साथ संवाद कर सकें। यहाँ से सफ़र शुरू हुआ, "विज़न क्वेस्ट" का। यह एक ऐसी पहल है, जिसमें स्टूडेंट्स वर्तमान में प्रासंगिक मुद्दों पर अपने रोल मॉडल्स से प्रश्न पूछते हैं। अपने पहले एपिसोड में ही दिल्ली के विद्यालयों के कुछ चुने हुए स्टूडेंट्स को मौक़ा मिला वर्तमान शिक्षा निदेशक , श्री हिमांशु गुप्ता, आईएएस, से रूबरू होने का।

विद्यार्थियों ने उन से उनके निजी जीवन, चुनौती और हॉबीज़ से ले कर शिक्षा में SDG लक्ष्य, नेतृत्व गुणवत्ता, वर्तमान शिक्षा प्रणाली और विज्ञान प्रसार जैसे गंभीर विषयों पर बात की। इस संवाद को YouTube पर Live Streaming के माध्यम से सभी स्कूलों तक पहुँचाया गया, जहाँ से स्कूल में उपस्थित स्टूडेंट्स भी इस से कनेक्ट हो पाये। कुछ स्टूडेंट्स ने तो लाइव सेशन में YouTube के ज़रिए अपने सवाल भी पूँछें।

साइंस ब्रांच, शिक्षा निदेशालय के लिए यह सचमुच एक गौरव का क्षण था। अब तक हम तीन एपिसोड पूरे कर चुके हैं, जिन में दूसरे एपिसोड में प्रोफेसर ज्योति कुमार और तीसरे एपिसोड में डॉ वंदना शिवा हमारे साथ थीं।

"एक विद्यालय ऐसा भी" हमारी नई उड़ान E-Magazine की एक रेगुलर फीचर्ड पिक्चर स्टोरी है, जिसमें SDG goal को लेकर स्कूल की यूनीक जर्नी को दर्शाया जा रहा हैं, यहीं से ही आईडिया निकला कि क्यों ना इन यूनीक स्टोरीज़ को पहचान कर सम्मानित किया जाये।

ग्रीन स्कूल अवार्ड:

इस प्रतिष्ठित अवार्ड के लिये एक गूगल फॉर्म के ज़रिए स्कूलों को उनकी रोज़ की दिनचर्या में पर्यावरण के लिए किए गये प्रयासों को साझा करना था। मुख्य बिंदु थे: स्कूल स्तर पर छोटे-छोटे नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम जगाना, पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के तरीके सीखने की शुरुआत करना जिससे बच्चे पर्यावरण के महत्व को समझें और इसकी देखभाल को दैनिक जीवन का हिस्सा भी बनाएँ। हमारे छात्रों को पर्यावरण-योद्धा बनने के लिए प्रेरित करना और उनमें महत्वपूर्ण योगदान के माध्यम से प्रकृति को जीवन का हिस्सा बनाने की आदत का विकास करना।

इस अवार्ड के लिए हमें सैकड़ों प्रविष्टियाँ मिली जिनमें से 21 विद्यालयों को विशेष कैटेगरीज़ के अन्तर्गत चुना गया। एक भव्य समारोह में माननीय निदेशक, दिल्ली शिक्षा निदेशालय, श्री हिमांशु गुप्ता जी एवं विशिष्ट अतिथि डॉ वंदना शिवा के हाथों से इन विद्यालय प्रमुखों, ईको क्लब इंचार्जेज एवं विद्यार्थियों को एक शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र दे कर सम्मानित किया गया।

नई उड़ान की इस यात्रा में कोर टीम को अपने वरिष्ठ पदाधिकारियों से काफ़ी सराहना मिली, और अध्यापकों एवं छात्रों का साथ भी। आज "नई उड़ान" हमारी स्कूल लाइब्रेरी में पढ़ी जाने वाली एक प्रमुख एवं लोकप्रिय पत्रिका हैं, यह सब आपसी तालमेल, टीम प्रबंधन, और परस्पर विश्वास से ही संभव हो पाया है।

आगे भी इस यात्रा को जारी रखने के लिये हम कई नये आयाम इसमें जोड़ रहे हैं। इनमें एक प्रमुख है, पॉडकास्ट। विशेष आवश्यकता वाले हमारे बच्चों और उन लोगों के लिए एक समावेशी प्रयास बनाने के लिए जो पढ़ने के बजाय सुनना पसंद करते हैं, हम कई पॉडकास्ट भी रिकॉर्ड कर रहे हैं जो जल्द ही लॉन्च किए जायेंगे।

सुबोध त्रिपाठी
टी.जी.टी सामाजिक विज्ञान
डॉ अंबेडकर नगर सेक्टर -4

अमृत उद्यान विद्यार्थियों की नजर से

अलग-अलग स्कूलों से आए विद्यार्थी अपने विविध रंगो की वर्दियों में चलते-फिरते फूलों के बग़ीचे से प्रतीत हो रहे थे। मानो आज अमृत उद्यान जीवंत हो उठा हो। बच्चों के कौतूहल और उत्साह से पूरा उद्यान खिलखिला उठा था।

स्थानीय भ्रमण की यात्रा की शुरुआत

दिल्ली शिक्षा विभाग के सौजन्य से हमें हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अपने स्कूल के विद्यार्थियों को स्थानीय भ्रमण के लिए लिए ले जाने का अवसर मिला। स्थानीय भ्रमण जहाँ विद्यार्थियों को उनके स्कूल की चारदीवारी से बाहर की दुनिया में स्वतंत्र रूप से सीखने का अवसर प्रदान करता है, वहीं उनमें कई सामजिक और भावनात्मक गुणों का विकास करने का माध्यम भी बनता है। हमारा गंतव्य स्थान राष्ट्रपति भवन के परिसर में स्थित 'अमृत उद्यान' तय हुआ। ऐसा पहली बार हो रहा था कि अमृत उद्यान को मानसून में आम लोगो के लिए खोला गया था। राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा दिनांक 6 सितम्बर के दिन अमृत उद्यान को दिल्ली के विद्यालयों के लिए निश्चित किया गया।

स्थानीय भ्रमण के लिए तैयार विद्यार्थियों का कौतूहल और उत्सुकता देखने लायक थी। इस भ्रमण के बारे में जितना हमने उनको बताया था, उससे कई गुना प्रश्न उनके मन में थे। विद्यार्थियों ने जिज्ञासावश जो स्वयं से जाना था, वह अब चर्चा का विषय बन चुका था। कुछ ने अमृत उद्यान के नाम का अर्थ और महत्व भी बताया। इस परिचर्चा में अलग-अलग तरीके से योगदान करते हुए अपनी-अपनी जानकारी से गंतव्य का खाका बनाने के बच्चों के इस स्वतः प्रयास ने इस स्थानीय भ्रमण की सफलता की बुनियाद रख दी थी।

एक अनोखा संयोग

रायसीना पहाड़ी पर कर्तव्य पथ के पश्चिमी छोर पर राष्ट्रपति भवन के परिसर में स्थित 'अमृत उद्यान' 15 एकड़ में फैला राष्ट्रपति भवन की आत्मा कहा जाता है।

गणतंत्र के प्रतीक के रूप में स्थित राष्ट्रपति भवन और उसमें 'अमृत उद्यान' को आम लोगों के लिए सामान्यतः फरवरी और मार्च के महीने में खोला जाता रहा है। ऐतिहासिक रूप से इस वर्ष यह पहली बार हो रहा था जब 'अमृत उद्यान' को मानसून में 16 अगस्त से 15 सितम्बर तक आम लोगों के लिए खोला गया था । ऐसा भारतवर्ष के स्वतंत्रता के अमृतकाल में प्रवेश के दौरान किया जा रहा था।

उद्यान प्रवेश

स्थानीय भ्रमण के लिए आज दिल्ली के विद्यालयों से बच्चे विविध रंगों के परिधानों में चलते फिरते फूलों के बग़ीचे से ही प्रतीत हो रहे थे। मानो आज अमृत उद्यान जीवंत हो उठा हो। हमारे प्रवेश करते ही दूर तक फैली हरियाली और 'परिदृश्य बागवानी' जिसमें पहाड़ी के स्वरूप को संरक्षित रखा गया गया था, उद्यान को विशेष आकर्षण प्रदान कर रहा था। विशाल और भव्य बरगद के वृक्ष जिनकी शाखाएँ, अब उनकी जड़ बन गई थीं, रायसीना पहाड़ी के तटस्थ प्रहरी प्रतीत हो रहे थे। इन वृक्षों की आयु सैकड़ों वर्ष में है। इनको संरक्षित करके मंडपों से सजाया गया था।

अमृत उद्यान के मुख्य आकर्षण

अमृत उद्यान 'परिदृश्य उद्यान शैली' आधार पर बनाया गया है। इसमें रास्तों के दोनों तरफ शो- प्लांट की झाड़ियों तथा मौसमी फूलों का प्रयोग किया गया है। गुलाब, डहलिया, ट्यूलिप, गेंदा, एशियाई लिली, डैफ़डिल्स और जलकुंभी जैसे फूलों को यहाँ विभिन्न प्रखंडों में लगाया गया है जिनमें उनके नाम और वैज्ञानिक नामों की एक सूचना भी लगाई गई थी। अमृत उद्यान में नहरों ने पूरे प्रांगण को चार भागों में विभाजित किया हुआ है, जो मुगलों के उद्यान बनाने की शैली रही है। इन नहरों में कलकल बहती धारा ने कानों को अपनी ओर आकर्षित किया, वहीं दूसरी ओर संगीतमय फव्वारों ने भी बच्चों के मन पर अपनी विशेष छाप छोड़ी। फव्वारों के साथ की जलराशियों में राष्ट्रपति भवन तथा आकाश में चलते बादलों के प्रतिबिंब से बना चलचित्र बड़ा ही मनमोहक था।

के गुलाबों की प्रजातियाँ थीं जो महान हस्तियों को समर्पित थीं । ऐसा प्रतीत होता था जैसे उनके दिए योगदान और बलिदान की खुशबू इन फूलों में समा गई है।

अमृत उद्यान में बाल वाटिका एक प्राकृतिक कक्षा थी जिसमें स्पीकरों की सहायता से राष्ट्रपति भवन और अमृत उद्यान के इतिहास के विषय में बताया जा रहा था। इतिहास के साक्षी बने इन पेड़ों से बच्चे स्वतंत्रता की अमृत गाथा बड़े ध्यान से सुन रहे थे। शीशम के एक 225 वर्ष पुराने पेड़ पर एक ट्री हाउस भी बना हुआ था। आध्यात्मिक उद्यान में खैर, बांस, चंदन, हिना, सीता अशोक, टेम्पल ट्री, कदम्ब, पलाश, लौंग अंजीर, खजूर के पेड़, कृष्णा बर्गल, जैस्मीन, रीठा और शमी के वृक्षों का समूह था। वहीं फलदार वृक्षों में संतरे, आम, आवलाँ, अमरूद, अनार, कस्टर्ड सेब, जामुन जैसे वृक्षों के झुंड पूरे अमृत उद्यान में फैले हुए हैं। टैक्टाइल उद्यान में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि की समावेशी व्यवस्था इस उद्यान को एक विशेष पहचान दे रही थी। यहाँ बच्चे सूचना पटल को छूकर पौधों और फूलों के बारे में जान रहे थे। यह एक सशक्त करने वाली घटना थी।

बगीचों को ढकने वाली नर्म दूब को देखने मात्र से मन को असीम ठंडक मिल रही थी। लॉन में घास के ऊपर पुष्पों की पंखुड़ियों की रंगोली बनाई गई थी। फूलों के बगीचों में विभिन्न रंगों

आगे हमने एक वृत्ताकार उद्यान देखा जिसके मध्य में एक गोल फव्वारा लगा था। उसका चक्कर लगाते हुए ऐसा लगा मानो चारों तरफ से यह एक जैसा दिख रहा हो। इस उद्यान में संकेंद्रित वृतों में सजावटी पौधों और ट्यूलिप के फूलों से इसकी ज्यामितीय रूप से सटीक सजावट की गई थी। लंबे बगीचे और गोलाकार बगीचे की ऊँची दीवारें ज्वाला बेल, तुरही बेल और चमेली जैसी लताओं से ढकी हुई थीं जो आसपास के वातावरण को सुगंधित कर रही थीं।

स्थानीय भ्रमण को सशक्त और समृद्ध करने वाली एक घटना

इस स्थानीय भ्रमण से होने वाले अनुभव और अनुभूति ने न केवल विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि की बल्कि इस अवसर ने उनके मन को आत्मविश्वास और हर्ष से भी भर दिया। स्थानीय भ्रमण का यह साझा अनुभव विद्यार्थियों और शिक्षकों को भावनात्मक रूप से और निकट लाया।

मैं निश्चित तौर पर यह कह सकता हूँ कि जो अवसर दिल्ली शिक्षा विभाग ने बच्चों को प्रदान किया है, वह उनकी स्मृति में अमिट बना रहेगा और उन्हें जीवन भर प्रकृति की ओर अपनी कर्तव्यनिष्ठा की याद दिलाता रहेगा।

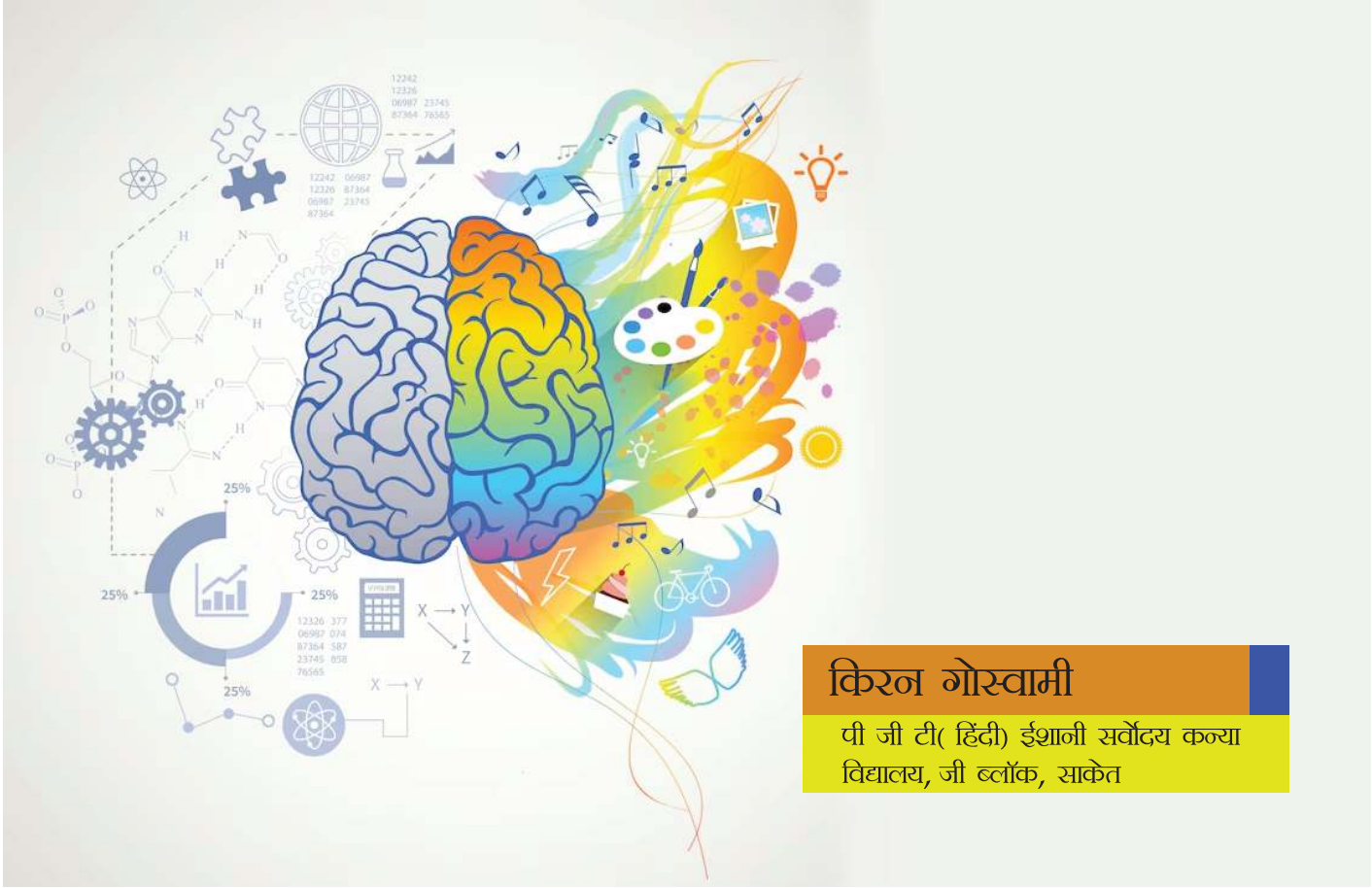

किरन गोस्वामी
पी जी टी(हिंदी) ईशानी सर्वोदय कन्या विद्यालय, जी ब्लॉक, साकेत

पाठ्येतर गतिविधियों की उपयोगिता

पाठ्येतर गतिविधियाँ शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और एक छात्र के समग्र विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। ये गतिविधियाँ पाठ्यक्रम के साथ-साथ चलती हैं इसलिए इनको सह-पाठ्यक्रम गतिविधि भी कहा जाता है।

इनमें लेखन, कला, संगीत, नृत्य, नाटक, खेल, PET- योगा इत्यादि शामिल हैं। पाठ्येतर गतिविधियों के महत्व को स्वीकार करते हुए इसे नई शिक्षा नीति 2020 में भी शामिल किया गया है। पाठ्येतर गतिविधियाँ कक्षाओं से परे, छात्रों को, मूल्यवान जीवन कौशल प्रदान करती है और शैक्षणिक प्रदर्शन और भविष्य के कैरियर लाभों में सुधार के लिए उनके व्यक्तिगत विकास में मदद करती हैं।

इसके अलावा पाठ्येत्तर गतिविधियों में भाग लेने से छात्रों के शारीरिक और भावनात्मक विकास में भी सहायता मिलती है। साथ ही इससे उन्हें सामाजिक संपर्क बनाने और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलती है।

आइए यह समझने की कोशिश करते हैं कि नई शिक्षा नीति और 21वीं सदी की स्किल परिप्रेक्ष्य में पाठ्येतर गतिविधियाँ कैसे काम करती हैं, और एक अध्यापक कैसे अपनी दिनचर्या में इन्हें शामिल कर सकता है।

नए कौशल, क्षमताएँ और विश्वास का विकास :-

दिल्ली शिक्षा में हाल ही में माइंडसेट करिकुलम के तहत हैप्पीनेस, ईएमसी और देशभक्ति कालांश जोड़े गये, जिनका उद्देश्य छात्रों को कई तरीकों से जीवन कौशल सीखने और क्षमताओं में विश्वास पैदा करने का अवसर प्रदान करना है। इन कक्षाओं में की जाने वाली गतिविधियाँ छात्रों को नई चीजों को आजमाने और खुद को अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने का मौका देती हैं, जो उन्हें विकास की मानसिकता विकसित रखने, जोखिम लेने और अपनी गलतियों से सीखने की इच्छा विकसित करने में मदद करती है।

इस इंटरवेन्शन की ख़ासियत यह भी थी कि सिर्फ़ छात्र ही नहीं, अध्यापक भी अपनी कक्षा में नवीनतम प्रयोग करें। इन गतिविधियों में भाग लेने से छात्रों को नई चुनौतियों और अनुभवों का सामना करना पड़ता है जो उन्हें समस्या सुलझाने के कौशल, अनुकूलन क्षमता और लचीलापन विकसित करने के साथ साथ समाज और देशहित के लिए जागरूक नागरिक बनने में मदद करता है। भिन्न-भिन्न गतिविधियों में भाग लेकर छात्र उपलब्धि और सफलता के माध्यम से अपनी क्षमताओं में विश्वास पैदा करता है, और उपलब्धियों पर गर्व करना सीखता है। कुल मिलाकर नए कौशल सीखने और अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास पैदा करने का अवसर छात्रों के लिए काफ़ी कारगर अनुभव साबित हुआ है।

टीमवर्क, संचार और नेतृत्व कौशल का विकास :-

स्कूलों में स्टूडेंट एडवाइजरी बोर्ड का गठन, स्टूडेंट क्लब्स, प्रोजेक्ट वॉइस जैसे कई इंटरवेन्शंस शामिल किए गए हैं, जिनकी गतिविधियाँ छात्रों को सामाजिक कौशल विकसित करने का मौका दे रही है, जो शिक्षा और व्यापक दुनिया दोनों में उनके समग्र विकास और सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। यह छात्रों को टीम में काम करने, अपने साथियों के साथ मजबूत संबंध बनाने और नेतृत्व कौशल में सुधार करने का अवसर भी प्रदान करता है। ये सामाजिक कौशल न केवल स्कूल में मूल्यवान हैं बल्कि कार्यस्थल और जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलता के लिए आवश्यक है।

समय प्रबंधन :-

टीडीसी प्रोग्राम के अन्तर्गत लर्निंग इम्प्रूवमेंट साइकिल, (LIC) एक ऐसा सम्यक् प्रयोग है, जहाँ टीचर्स क्लास रूम पैडेगॉजी पर काम कर रहे हैं। एक कसी हुई व्यवस्था, छात्रों के उनके नियमित स्कूल के काम के अलावा उनके जुनून के लिए समय निकालने का अवसर भी प्रदान करता है। अनुशासन एवं नियमितता, दो ऐसे आयाम हैं, जो एक स्वस्थ मानसिकता वाले प्रबंधन से ही हासिल की जा सकती है।

जब विद्यालय का कार्यक्रम व्यस्त होता है और छात्रों के पास अपनी शैक्षणिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के बाद अकसर अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए बहुत कम समय होता है तब पाठ्येतर गतिविधि में अपने जुनून के कारण इसमें भाग लेने के लिए वह समय निकाल ही लेता है। ऐसा करके वह मूल्यवान समय प्रबंधन कौशल सीखता है।

सामाजिक कौशल :-

खेल, वाणी कौशल, लेखन आदि विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने से छात्र विभिन्न समूहों के लोगों के संपर्क में आते हैं। वे उनके साथ बातचीत करते हैं, उनकी संस्कृति से परिचित होते हैं साथ ही नए दोस्त बनाते हैं। छात्र अंतर्मुखी हो या बहिर्मुखी; इन गतिविधियों में भाग लेने के कारण कल्पना से परे उनमें सामाजिक कौशल का विकास होता है। वे समान विचारधारा वाले लोगों के साथ दोस्ती के गहरे संबंध विकसित करते हैं, साथियों के साथ सहयोग की भावना विकसित होती हैं।सामाजिक बाधाओं का सामना एवं उसका समाधान करना सीख जाते हैं। ये कौशल उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों के लिए लाभदायी हैं। हमारी ई-मैगज़ीन, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल प्लेटफॉर्म्स, संस्कृत/ हिन्दी/ विज्ञान सप्ताह, गणित/ विज्ञान/टीएलएम प्रदर्शिनी, लोकल टूर कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जो विद्यार्थियों की 21वीं सदी की स्किल पर काम करने में सक्षम हैं।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पाठ्येतर गतिविधियाँ छात्रों की रुचियों का पता लगाने, सौंदर्य, कलात्मक, ऐतिहासिक, बौद्धिक तथा सामाजिक रूप से विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करता हैं। ये सभी गतिविधियाँ छात्र के समग्र विकास में सहायक सिद्ध होती हैं एवं शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सकारात्मक सुधार देखने को मिलता है। पाठ्येत्तर गतिविधियाँ निःसंदेह शिक्षा का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग हैं।

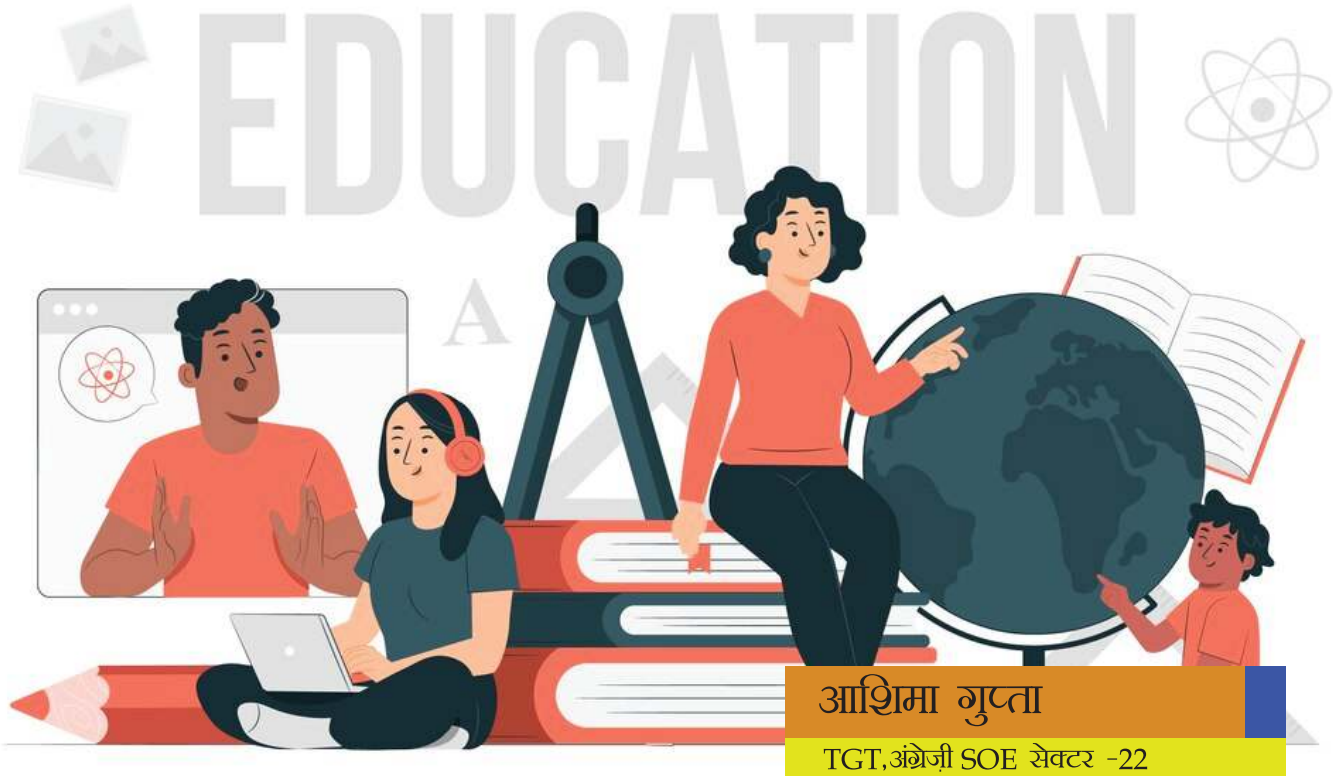

आशिमा गुप्ता
TGT, अंग्रेज़ी SOE सेक्टर -22
द्वारका

सोशल और इमोशनल लर्निंग (एस.ई.एल)

आज के तेज़ रफ़्तार और प्रतिस्पर्धी दौर में हम तनावग्रस्त रहने लगे हैं और हमारी सोच में नकारात्मकता बढ़ रही है। इस कारण बच्चों और बड़ों में भावनात्मक अस्थिरता, व्यवहार संबंधी समस्याएँ या संतुष्ट व खुश न रह पाना, मुख्य लक्षण बन गए हैं।

इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय, दिल्ली ने UNESCO के MGIEP मिशन के तहत सरकारी विद्यालयों के सभी शिक्षकों को सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा ग्रहण करने का अवसर दिया। जिसे लोकप्रिय रूप से एस.ई.एल कहा जाता है। यह एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की ऑनलाइन ट्रेनिंग है, जिसे सभी शिक्षकों को UNESCO के फ्रेमर स्पेस (FramerSpace) नामक प्लेटफार्म पर करना था। शिक्षकों के निरंतर व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) के लिए यह एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसके अंतर्गत सभी प्रतिभागियों को अपने समय अनुसार self paced E-learning modules द्वारा इस ट्रेनिंग को पूरा करने का मौका मिला।

सामाजिक भावनात्मक शिक्षा के पांच प्रमुख भाग हैं-

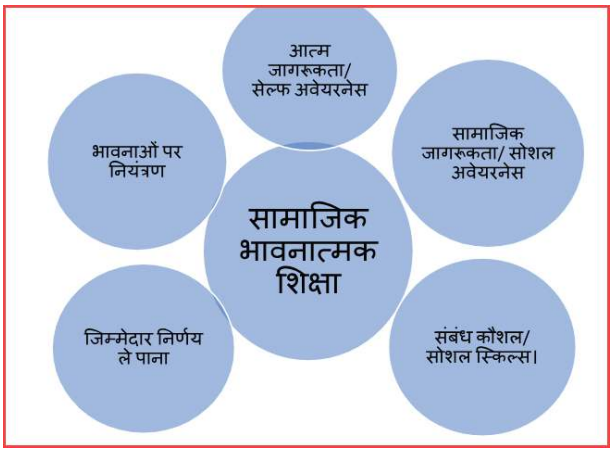

सोशल और इमोशनल लर्निंग (एस.ई.एल) की, सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों में, भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने, सकारात्मक संबंध बनाने, आत्म जागरूकता हासिल करने, समस्याओं को हल करने, जिम्मेदार निर्णय ले पाने और चुनौती पूर्ण परिस्थितियों को सँभालने के लिए दक्षता और दृष्टिकोण विकसित करने में अहम भूमिका को ध्यान में रखते हुए इस ट्रेनिंग को दो चरणों में कार्यान्वित किया गया।

प्रथम चरण (10 जुलाई से 13 अगस्त,2023) में दिल्ली शिक्षा निदेशालय के लगभग 450 मेंटर टीचर, एकेडमिक कोऑर्डिनेटर और टी.डी.सी को मास्टर ट्रेनर के रूप में एस.ई.एल की ट्रेनिंग दी गई।

इसके अंतर्गत उन्होंने तीन कोर्स किए-
1) शिक्षकों के लिए एस.ई.एल
2) एस.ई.एल फॉर क्लासरूम
3) फैसिलिटेटर/ मास्टर ट्रेनर फॉर एस.ई.एल

द्वितीय चरण (17 अगस्त से 22 सितंबर,2023) में मास्टर ट्रेनर्स के सहयोग से सरकारी स्कूल के सभी अध्यापकों तक इस ट्रेनिंग को पहुँचाया गया।

शिक्षकों के लिए एस.ई.एल एक प्रारंभिक पाठ्यक्रम है जो न्यूरोसाइंस (तंत्रिका विज्ञान) और साइकोलॉजी (मनोविज्ञान) द्वारा शिक्षकों को ऐसे उपकरण/ कौशल प्रदान करता है, जो स्वयं उनकी सामाजिक और भावनात्मक दक्षताओं को बढ़ाते हैं। इसके अंतर्गत हमने चार मॉड्यूल पूरे किए जिसमें हमने 'शिक्षकों के लिए सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा', ईएमसीसी (EMCC) फ्रेमवर्क, कक्षा प्रबंधन के लिए एस.ई.एल और कक्षा में स्वस्थ संबंधों के लिए एस.ई.एल पर संज्ञान लिया।

हमने मिरर न्यूरॉन्स (Mirror Neurons) के बारे में जाना और समझा कि किस तरह हमारी भावनाएँ या दूसरों के प्रति हमारी सोच, सामने वाले व्यक्ति तक भी ट्रांसमिट होती हैं। यदि हम किसी व्यक्ति के लिए सकारात्मक सोच रखते हैं तो वह हमारे व्यवहार में प्रदर्शित होता है और सामने वाले व्यक्ति में भी उसी तरह की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं।
इसी प्रकार, हमारी स्वयं के लिए और दूसरों के लिए नकारात्मक सोच, निराशा और असंतोष को बढ़ावा देती है।अप्रसन्न शिक्षक एवं बच्चे इन नकारात्मक भावनाओं को अन्य लोगों के साथ अपने संबंधों में या अपने विद्यालय सम्बन्धी कार्यों में प्रतिबिंबित करते है।

इस संदर्भ में हमने अपने मानसिक स्वास्थ्य के लिए, यूटयूब वीडियो द्वारा कई मेडिटेशन एवं ब्रीदिंग एक्सरसाइज का अभ्यास किया। वैज्ञानिक शोध पढ़े, दी गई परिस्थितियों पर चिंतन किया और नियमित अंतराल पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देकर एस.ई.एल को लेकर अपनी समझ को बनाया ।

एस.ई.एल फॉर क्लासरूम 5 मॉडयूल का कोर्स है जिसके द्वारा शिक्षाकों को, अपने छात्रों में ई.एम.सी.सी(EMCC) की दक्षताओं और एस.ई.एल की जागरूकता विकसित करने के महत्व से परिचित कराया गया। साथ ही, छात्रों में संवेदनशीलता करुणा और सचेतावस्था को बढ़ावा देने के तरीके बताए गए और गहन पूछताछ को प्रोत्साहित करने की दक्षताओं के बारे में सिखाया गया।

हम सभी जानते हैं कि, छात्र प्रतिरूप द्वारा सीखते हैं। स्वस्थ संबंधों का अनुभव, एंपैथी, भावनाओं पर नियंत्रण, लोगों के विभिन्न दृष्टिकोण का सम्मान करना इत्यादि छात्रों को अच्छा व्यवहार करना सिखाता है। छोटे बच्चे दूसरों की भावनाओं को लेकर बहुत संवेदनशील होते हैं। अगर वे अपने चारों और दुख देखते हैं तो उन पर नकारात्मक असर होता है। वे भी दुखी महसूस करने लगते हैं।

इस कोर्स के द्वारा शिक्षाकों ने अपनी भूमिका को पहचाना कि, छात्रों को स्वस्थ संबंध पहचानने और उसको विकसित करने में, छात्रों को बुलीइंग के बारे में समझाने और भयभीत होने की स्थिति में संचालन करने में, शिक्षाक किस तरह सहायता कर सकते है।

एक मेंटर टीचर की भूमिका में, मैंने भी ये तीन कोर्स पूरे किए और सर्टिफिकेट प्राप्त किए। तत्पश्चात एक मास्टर ट्रेनर के रूप में, द्वितीय चरण में मैंने अपने सभी मेंटी स्कूलों के शिक्षाकों को यह कोर्स पूरा करने में सहायता की। इस कोर्स को करने के पश्चात मैंने महसूस किया कि, मैं अब दूसरों कि दृष्टिकोण से चीजों को देखने और समझने लगी हूँ।

मेरे अपने मेंटी स्कूलों के शिक्षाकों के साथ अच्छे संबंध बन पाए हैं एवं मैं अपनी और अन्य शिक्षाकों की चुनौतियों को एक सकारात्मक दृष्टिकोण एवं ग्रोथ माइंड. सेट के साथ देखती हूँ और उनका समाधान निकाल पाती हूँ।

समरीन खान
प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान, GGSSS
पनामा बिल्डिंग

दिल्ली का प्रोजेक्ट प्रतिभा

एक उज्ज्वल भविष्य के लिए युवा मनों को प्रशिक्षित करने का मिशन

दिल्ली शिक्षा विभाग ने युवाओं के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण पहल की है जिसका उद्देश्य उनकी प्रतिभा को निखारना है। इस पहल के तहत, सरकारी स्कूलों के छात्रों को एक बेहतर शिक्षा का मौका दिया जा रहा है, जिससे वे न केवल शैक्षिक बल्कि सामाजिक और भावनात्मक दृष्टि से भी सुदृढ़ हो सकें।

प्रोजेक्ट प्रतिभा एक अद्वितीय न्यूरोप्लास्टिसिटी प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जिसे 5 से 15 वर्ष की आयु के छात्रों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया है।

इस कार्यक्रम में इंटरएक्टिव तकनीक का उपयोग करके उनके मस्तिष्क को सक्रिय किया जाता है, जिससे उनके मानसिक और बौद्धिक कौशल में सुधार होता है। इस पहल का उद्देश्य यह है कि हर छात्र व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की दिशा में अग्रसर हो सके।

प्रोजेक्ट प्रतिभा के पहले चरण में, दिल्ली के शिक्षाकों को हैदराबाद के हार्टफुलनेस इंस्टीटयूट में प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें सुबह 7:00 से शाम 6:00 बजे तक कड़ा अनुशासन था। इस प्रशिक्षण के दौरान, शिक्षाकों को मस्तिष्क के विभिन्न आयामों को सक्रिय करने के विभिन्न अभ्यासों का प्रशिक्षण दिया गया, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मस्तिष्क, आँखें, श्वास का अभ्यास, रिलैक्सेशन संगीत, और नृत्य के साथ-साथ प्रार्थना और सहज आराम सत्र भी शामिल थे, जो उनके मानसिक और भौतिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने के लिए महत्वपूर्ण थे।

प्रोजेक्ट प्रतिभा के दूसरे चरण में, इन मास्टर ट्रेनर्स को विभिन्न स्कूलों में नियुक्त किया गया, जहाँ 30 से 40 बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाना था। इसमें तय कार्यक्रम के अनुसार मानसिक, भौतिक, और आध्यात्मिक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया गया और उनके प्राकृतिक अवलोकन और अनुभव की क्षमता को विकसित करने का प्रयास किया गया, जिसके अभूतपूर्व परिणाम सामने आये।प्रोजेक्ट प्रतिभा का अगला चरण उन अध्यापकों के साथ था जो अपने विद्यालयों में इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए तैयार थे। इन अध्यापकों को तीन दिवसीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया गया ताकि वे अपने विद्यालयों के 10-10 बच्चों को 5 दिनों के लिए प्रोजेक्ट प्रतिभा के अंतर्गत प्रशिक्षित कर सकें। इसके द्वारा, उनकी कॉग्निटिव क्षमता में सुधार होने में मदद मिली। विद्यार्थियों, अभिभावकों और विद्यालय समुदाय के लिये यह अभूतपूर्व अनुभव था।

प्रोजेक्ट प्रतिभा ने शिक्षकों को उनके छात्रों के विकास के लिए नई दिशाएँ दीं। यह पहल न केवल शिक्षकों को बल्कि उनके छात्रों को भी मानसिक क्रियाशीलता, सामाजिक सहयोग, और आत्मविश्वास में वृद्धि करने का मौका प्रदान कर रही है। माननीय डायरेक्टर श्री हिमांशु गुप्ता जी से ले कर, एस सी ई आर टी एवं डायरेक्टरेट आफ एजुकेशन के सभी घटक यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हर छात्र अपनी प्राकृतिक तरीके से सोचने और सीखने की क्षमता को विकसित करें। इसीलिए इस प्रोजेक्ट की सिर्फ़ मॉनिटरिंग ही नहीं हो रही, बल्कि सभी अधिकारी स्वयं इन ऐक्टिविटीज़ में शामिल होकर इसे महसूस भी कर रहे हैं।

दिल्ली शिक्षा विभाग का प्रोजेक्ट प्रतिभा एक उद्देश्यपूर्ण पहल है जो शिक्षकों और छात्रों के बीच सामर्थ्य विकसित कर रही है। इससे हमें यह उम्मीद है कि दिल्ली के शिक्षा क्षेत्र में और अधिक प्रतिभागिता होगी और हमारी युवा पीढ़ियों को उच्चतम शिक्षा और करियर के क्षेत्र में अधिक मौके मिलेंगे, जिससे वे अपने सपनों को पूरा कर सकें। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से छात्र अपनी आंतरिक शक्तियों को विकसित करेंगे, वास्तविक मुद्दों को हल करेंगे, बेहतर निर्णय लेंगे, और समग्र विकास की ओर अग्रसर होंगे।

स्वच्छता रोज़ का त्योहार

रुचि वली
टीजीटी हिंदी, SKV रानी गार्डन

आज, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय ललिता पार्क पहुँचकर मैंने अनुभव किया कि विद्यालय में कुछ खास होने वाला है। मैं कक्षा की तरफ निकली तो सीढ़ियाँ, कक्षा के बाहर का बरामदा ज्यादा ही साफ दिखे। कक्षा सातवीं में पहुँची तो वहाँ हिंदी विषय का कालांश था। अध्यापिका के आने से पहले मैंने सोचा, क्यूँ न छात्राओं से ही कुछ बात कर लूं। मैंने बच्चों से पूछा कि, आज क्या कुछ खास है या विद्यालय में कोई आने वाला है क्या?, तो एक छात्रा ने कहा, नहीं तो। मैंने फिर विस्मयता से पूछा, अच्छा! तो आज आपका विद्यालय और कक्षाएँ और दिनों की अपेक्षा ज्यादा साफ़ और सुसज्जित क्यों दिख रहा हैं ?

कुछ बात तो जरूर हैं, तभी एक छात्राएँ खड़ी हुई और बोली मैडम, "हम सब मिलकर स्वच्छता पखवाड़ा मना रहे हैं।" इतने में हिंदी की अध्यापिका सुनीता जी भी आ गई, छात्राओं ने उनका अभिवादन किया और वह छात्रा फिर से बताने लगी कि, "वैसे स्वच्छता तो सदैव ही होनी चाहिए इसीलिए हम अपने घर एवं विद्यालय को साफ और स्वच्छ रखने का पूरा प्रयास कर रहे हैं"।

सुनीता जी ने छात्रा को शाबाशी दी और बताया कि छात्राओं ने स्वच्छता पखवाड़े में, स्कूल में कई गतिविधियाँ की, जैसे श्रमदान, पोस्टर बनाना, मॉडल बनाना, कविता लेखन, स्लोगन लेखन आदि। विद्यालय में उसकी प्रदर्शनी भी लगाई गई है। "अच्छा! यह तो बहुत अच्छी बात है, मैं इसे अवश्य देखूँगी", मैंने कहा। इतने में में ही एक और छात्रा बोली, यही नहीं, कल सुबह हम स्वच्छता बनाए रखने के लिए स्कूल के आसपास की गलियों में रैली भी निकालेंगे जिसके लिए हमने स्लोगन भी तैयार किए हैं और पोस्टर भी"। मैंने उत्सुकतावश उनसे स्लोगन पूछ ही लिए तो एक छात्रा खड़ी होकर बोली

"मत करो अपने देश को मैला,
बाजार लेकर जाओ थैला"

"स्वच्छता से रहती बीमारी दूर, स्वच्छता को अपनाओ ज़रूर"

इसके साथ-साथ छात्राओं ने रैली के लिए तैयार किए गए पोस्टर भी दिखाए। तभी मैंने उनसे एक प्रश्न किया, "अच्छा बच्चो, तो क्या यह स्वच्छता हमें सिर्फ पखवाड़ा मनाने तक ही रखनी चाहिए? इससे पहले कि मैं आगे कुछ बोलती तभी एक छात्रा उठी और बोली," नहीं मैडम स्वच्छता तो हमेशा रखनी चाहिए क्योंकि गंदगी दूर तो बीमारी दूर"।यह उसने एक पोस्टर पर भी लिखा था। तभी एक छात्रा जो पीछे बैठी थी बोली, "स्वच्छता तो सदैव मनाए जाने वाला त्यौहार है"।जिसे सुनकर मुझसे ताली बजाए बिना नहीं रहा गया। इन छात्राओं के मन में स्वच्छता के प्रति ऐसी समझ एवं जागरूकता देखकर मैंने सोचा यदि सभी के मन में ऐसे भाव हो जाये तो शायद स्वच्छता पखवाड़ा मनाने की भी आवश्यकता ना पड़े। पर कहीं ना कहीं इन छात्राओं के मन में यह जागरूकता लाना और इसे उनके घरों तक पहुँचाना इसी में पखवाड़ा मनाने की सफलता है। इन्हीं के माध्यम से पूरा स्कूल, स्कूल के आसपास के लोग और छात्राओं के घर में उनके अभिभावक भी प्रभावित और जागरूक होंगे।

कालांश खत्म होते ही मैंने छात्राओं के साथ प्रदर्शनी देखने का मन बनाया। छात्राओं के साथ पूरे विद्यालय और प्रदर्शनी का दौरा करना बेहद शानदार अनुभव रहा। सच ! बच्चों ने इतने सुंदर पोस्ट, मॉडल ,चार्ट, कविताएँ , स्लोगन आदि बनाकर पूरी प्रदर्शनी सजाई थी जिसे देखकर मन प्रसन्न हो गया और कह उठा - स्वच्छता में ही जीवन है, "गंदगी दूर तो बीमारी दूर।"

मुरारी झा

TGT , सामाजिक विषय , सेक्टर-7, R K पुरम

रीड विद अ टीचर:

साथ मिलकर शिक्षा साहित्य पढ़ने की एक यात्रा

बच्चों और शिक्षकों के साथ काम करते हुए, यह सवाल लगातार बना रहता है कि हम क्या कर सकते हैं जिससे कक्षा में पढ़ाई का माहौल बेहतर हो सके। हम ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे कक्षा में हो रहे कार्यों को जीवन के अन्य क्षेत्रों में हो रही गतिविधियों से अलग नहीं देखा जा सके? शिक्षा के क्षेत्र में शोध करने वाले लोग एवं अन्य विचारक इन सवालों पर विचार करते आए हैं और उन्होंने अपने विचारों को अपनी किताबों में दर्ज किया है। काम की अधिकता और अन्य कारणों से कई बार शिक्षक उन मूल्यवान विचारों से नहीं जुड़ पाते हैं। मुझे और मेरे कुछ साथियों को इन दोनों दुनियाओं से मिलने का मौका मिलता है। एक ओर, हम कक्षा में बच्चों के साथ होते हैं, और दूसरी ओर, शिक्षक बच्चों और स्कूली दुनिया के। मुझे इन दोनों को केन्द्र में रखकर रची गयी शिक्षा साहित्य की दुनिया से रूबरू होने का मौका मिला। इन दो अलग-अलग दुनियाओं के सम्पर्क का कक्षा में क्या प्रभाव पड़ता है, इसका मुझे व्यक्तिगत अनुभव मिला।

शिक्षा साहित्य की दुनिया निश्चित रूप से शिक्षकों को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया के अन्य क्षेत्रों में हो रहे नए कामों के बारे में जानने का मौका देती है, और बच्चों के जीवन के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को समझने और जानने का मौका देती है।

शिक्षा क्षेत्र में पिछले 15 सालों के अनुभवों को समेटते हुए, यह विचार आया कि क्यों न हम कुछ ऐसा प्रयास करें जिससे ज्यादा से ज्यादा शिक्षक कक्षा के कार्यों को शिक्षा साहित्य की दुनिया के साथ जोड़कर देख सकें। इसके दो महत्वपूर्ण फायदे हैं। पहला, शिक्षा साहित्य की दुनिया कक्षा को जीवंत बनाने में मदद करती है और दूसरा, शिक्षक जब शिक्षा साहित्य से जुड़ते हैं, तो वे अपने अनुभवों से इस साहित्य की दुनिया को अधिक समृद्ध करते हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है, शिक्षकों के हस्तक्षेप के बिना, शिक्षा साहित्य की दुनिया अधूरी है। ठीक इसी तरह, शिक्षा साहित्य में जो विचार और प्रयोग होते हैं, यदि उन्हें कक्षा तक पहुँचाने का प्रयास नहीं होता तो शिक्षा साहित्य अधूरा रह जाता है।

इसी प्रेरणा से, 2021 में चंदन झा जी के साथ हमने "रीड विद अ टीचर" नामक एक छोटे से कार्यक्रम की शुरुआत की। आमतौर पर, साहित्य पढ़ने को एक व्यक्तिगत क्रिया माना जाता है, लेकिन अगर साहित्य को समूह में पढ़ा जाए, तो इससे पेशेवर समुदाय को आगे बढ़ने का मौका मिलता है। इसलिए दो वर्षों में हमने इस तरह के करीब 42 कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इन कार्यक्रमों में हमारे साथ हजारों शिक्षक आए हैं, कभी एक पाठक के रूप में और कभी श्रोता के रूप में, और वे अपने अनुभवों से यह साबित करते हैं कि कैसे इस कार्यक्रम के माध्यम से पढ़ने के प्रति उनमें नई रुचि उत्पन्न हुई है।

इस कार्यक्रम के 1 वर्ष पूरा होने पर, हमने इसे एक नई दिशा देने का निर्णय लिया और आभासी दुनिया से निकलकर हम इसे बच्चों के बीच लेकर गए। बच्चों के साथ मिलकर किताब पढ़ने का प्रयास किया, जिसे हमने "रीड विद स्टूडेंट्स" नाम दिया। कई बार, किताबों को पढ़ कर उनके चेहरों पर उनके भावों को देखने का मौका मिला, जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। लेकिन हमने देखा है कि किताबों को पढ़ने से उनके मन में उत्साह पैदा होता है। जब वे कलाम साहब की जीवनी, "विंग्स ऑफ़ फायर" पढ़ रहे थे, या जब उन्हें स्वामी विवेकानंद जी की जीवनी से रूबरू होने का मौका मिला, हर किताब उनके जीवन को प्रेरित करती थी और उनके सपनों को नई दिशा देती थी।

कार्यक्रम के दो वर्ष पूरे होने का मौका हमारे लिए बहुत खास था, जब शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता जी ने खुद को एक पाठक के रूप में हमारे साथ जोड़ा। उन्होंने हमारे साथ मिलकर सोचने और समझने के क्षेत्र में एक नया पहलु जोड़ने वाली ब्रूस लिप्टन की किताब "द बायोलॉजी ऑफ़ बिलीफ" पढ़ी। इस किताब नें हमारे सोचने-समझने की योग्यता में सकारात्मक उर्जा के महत्व को रेखांकित किया है। शिक्षा निदेशक महोदय के साथ हमारे इस कार्यक्रम के साथ जुड़ना हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है कि हम शिक्षकों तक शिक्षा साहित्य की किताबों को लेकर पहुँचते रहेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि अधिक से अधिक हमारे शिक्षक साथी शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले नए प्रयोगों से अवगत होते रहें और कक्षा में पढ़ाई को बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयासरत रहें।

वीरभान सिंह
टीजीटी संस्कृत
आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छत्तरपुर

मेरा विद्यालय एक नई डगर पर

कुछ दिन पहले की ही बात है। दिल्ली के सभी विद्यालयों में मध्यावधि परीक्षाओं का शुभारंभ होने जा रहा था। प्रतिदिन परीक्षा के बाद के शेष समय का सदुपयोग कैसे किया जाए, इस विषय पर सभी शिक्षकों से विचार विमर्श करने के बाद हमारे प्रधानाचार्य द्वारा एक अनूठी योजना बनाई गई। क्यों न हम अपने विद्यालय में ही छोटी-छोटी उपयोगी और ज्ञानवर्धक सभाएँ आयोजित करें, जिसमें हमारे साथी शिक्षक-शिक्षिकाएँ ही एक-दूसरे को अपने अनुभवों और जानकारियों से लाभान्वित करें!

आइडिया ज़बरदस्त था। सभी ने मिलकर रोज़ की सभाओं के लिए विषय तैयार कर लिए। विषय ऐसे थे जो एक शिक्षक के रूप में जीवन भर हमारे काम आने वाले थे।

विद्यालय के शिक्षकों की शैक्षिक क्षमताओं का वर्धन करने के लिए इस नई पहल को मूर्त रूप दिया गया था आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छत्तरपुर के प्रधानाचार्य श्री मनदीप कुमार जी द्वारा।

इस कार्यक्रम के पहले दिन सरकार द्वारा प्रायोजित सभी छात्रवृत्तियों का लाभ योग्य छात्रों तक कैसे पहुँच सके, इस बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की गई। इस सत्र के बाद विद्यालय के ही एक शिक्षक श्री अतुल कुमार जी का कहना था,

"छात्रवृत्ति की उचित जानकारी के अभाव में छात्रों को कुछ भी बताना संशयपूर्ण होता था। परन्तु इस वर्ष मैं अपनी कक्षा के सभी योग्य छात्रों को सरकार द्वारा प्राप्त छात्रवृत्ति दिलवाने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा।"

अगले दिन शिक्षकों को प्राप्त होने वाले सभी प्रकार के अवकाशों के विषय में लागू होने वाले सभी नियमों और शर्तों पर विचार-विमर्श हुआ। हर रोज़ हम एक नई जानकारी के साथ स्वयं को अद्यतन पाते थे। आयकर के विषय पर सत्र भी हमारे लिए बहुत लाभदायक था। हमने जाना कि किस प्रकार सही प्रक्रिया के तहत हम अपना आयकर सभी उचित दस्तावेजों के साथ भर सकते हैं।

विद्यालय में लगने वाले विभिन्न बिलों के विषय में भी ज्ञान साझा किया गया। शिक्षक डायरी में शिक्षक अपना शिक्षण संबंधी विवरण किस प्रकार लेखबद्ध करें, इस विषय पर भी महत्वपूर्ण परामर्श प्रस्तुत किए गए। इस बारे में विद्यालय की एक शिक्षिका श्रीमती जोनी यादव जी ने बताया,

"जब से मैंने इन सत्रों में सेवा संबंधी नियमों के विषय मे जाना है, तब से मैं स्कूल में स्वंय को भावनात्मक रूप से काफी सहज महसूस कर रही हूँ।"

शिक्षकों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए योग, प्राणायाम और फिजियो थेरेपी के सत्र का भी आयोजन किया गया जिसमें विशेषज्ञों ने सभी को अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव करवाया। इस बारे में शिक्षिका श्रीमती किरण जोशी जी ने हमारे समक्ष एक सकारात्मक अनुभव प्रस्तुत किया,

"मैं जब भी लगातार कक्षाएँ लेकर स्टाफ रूम की तरफ जाती थी तो मानसिक थकान बहुत हो जाती थी। लेकिन जब से फिजियोथेरेपी और योग का सत्र हुआ है, तबसे मैं हर कक्षा में एक नई ऊर्जा के साथ प्रवेश करती हूँ।"

इस साप्ताहिक क्षमता संवर्द्धन कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधानाध्यापक सहित सभी वरिष्ठ अनुभवी शिक्षकों का अतुलनीय योगदान था जिन्होंने एक प्रशिक्षक की भूमिका निभाकर हम सभी को एक नई राह पर अग्रसर किया।

हमारे स्कूल में नवनियुक्त शिक्षकों की संख्या काफी अधिक है। उनके लिए तो यह कार्यक्रम और भी अधिक उपयोगी, रुचिपूर्ण और ज्ञानवर्धक था। इन सत्रों में शिक्षकों को जिस जोश और उत्साह के साथ सभागार में प्रवेश करते देखा, वह निश्चित रूप से काबिल-ए-तारीफ था। मेरे लिए यह नूतन ज्ञान, नया अनुभव, हृदय में दृढ़ विश्वास भर देता था।

इन सत्रों का वातावरण पूरी तरह लोकतांत्रिक और मैत्रीपूर्ण होता था। कोई भी संशय होने पर हमारे प्रधानाचार्य जी हमेशा समाधान के साथ उपस्थित रहते थे।

छात्रों की मध्यावधि परीक्षाओं के दौरान एक सप्ताह तक रोज़ एक घंटा शिक्षकों और छात्रों से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श करना हम सभी स्टाफ सदस्यों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ है।

दीपिका असवाल

टी जी टी हिंदी, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर-4 , डॉ अंबेडकर नगर

एक विद्यालय ऐसा भी

विद्यालय एक ऐसा स्थान है, जहाँ छात्र शिक्षा के साथ - साथ जीवन के विभिन्न कौशलों को सीखता है। विद्यालय ज्ञान का मंदिर कहलाता है। छात्र विद्यालय में जीवन का सबसे अधिक समय व्यतीत करते हैं और कई विषयों की शिक्षा लेते हैं। शिक्षक अपने ज्ञान द्वारा छात्रों को सफलता प्राप्त करने हेतु मार्ग दिखाते हैं।

एक विद्यालय न केवल पुस्तकीय ज्ञान बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति समझ विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। बच्चों की समझ को उचित व उन्नत दिशा में लेकर जाना एक विद्यालय का परम कर्तव्य होता है। इसी कड़ी में आज हम आपको एक ऐसे विद्यालय से मिलवाते हैं जो छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, तिगरी, दिल्ली का एक ऐसा ही विद्यालय है जो सेक्टर - 4, डॉ. अंबेडकर नगर में स्थित है।

यह विद्यालय विभिन्न सामाजिक जागरूकता अभियानों, अकादमिक गतिविधियों व पर्यायवरणीय गतिविधियों द्वारा बच्चों के सामाजिक - भावनात्मक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विद्यालय शून्य अपशिष्ट अवधारणा पर पिछले कई वर्षों से कार्य कर रहा है। विद्यालय में जितने भी अनावश्यक अपशिष्ट पदार्थ एकत्रित होते हैं उन्हें पुन: उपयोग कर सुंदर कलाकृति में बदल दिया जाता है।

विद्यालय का स्वागत क्षेत्र ऐसी ही सुंदर कलाकृति है, जिसे अपने आप टूटे हुए पेड़ के तने से बनाया गया है। इस क्षेत्र को सुंदर बनाने में विद्यालय की कला शिक्षिका व होनहार बच्चों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शून्य अपशिष्ट अवधारणा की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए बच्चे और शिक्षक अपने पास बेकार पड़े टायरों को विद्यालय लेकर आए और उन्हे सुंदर कलाकृति में बदलने का कार्य हमारे वॉचमैन भैया श्री छोटे लाल व श्री फेरू जी ने बड़े ही मनोयोग से किया है।

विद्यालय में पानी की टंकी बेकार पड़ी हुई थी हमने अपने कलाकारों द्वारा उन्हे सुंदर गमलों में सजा दिया अब बच्चे उनमें अपने मनपसंद पौधे लगाकर प्रतिदिन उन्हें देखते हैं और विद्यालय हरा भरा लगता है। वैसे विद्यालय No Use Plastic अवधारणा पर दृढ़ संकल्प लिए हुए है यदि प्लास्टिक को हम अपने दैनिक जीवन से बिलकुल हटा नहीं सकते हैं। लेकिन इसका इस्तेमाल काम जरूर कर सकते हैं।

छात्रों को इस हेतु समय-समय पर जागरूक किया जाता है जिसके फलस्वरूप छात्र अपने घरों से प्लास्टिक की बेकार बोतलें लेकर आए और उनसे अपने विद्यालय को सुंदर बना दिया गया।

सुंदर सजे घर में जिस प्रकार परिवारजनों के प्राण बसते हैं ठीक उसी प्रकार हम सबके प्राण भी अपने हरे भरे सुंदर सजे विद्यालय में बसते है हमारी आँखों और हृदय को सुकून अपने विद्यालय की हरियाली को देखकर ही आती है। हरियाली देखकर दिल बाग बाग हो जाता है। हम अपने विद्यालय के हर कोने का सकारात्मक उपयोग करना अपनी प्रधानाचार्या महोदय श्रीमती सोनिया आहूजा के मार्गदर्शन में ही करना सीखे हैं। उनके मार्गदर्शन के कारण ही हमारा विद्यालय इतना स्वच्छ, सुंदर और हराभरा बना है।

विद्यालय में Green Birthday मनाकर हम हरियाली को प्रोत्साहित करते हैं। जिस बच्चे का जन्मदिन होता है वह एक पौधा लेकर आता है और प्रात:कालीन सभा में प्रधानाचार्या को पौधा देकर विद्यालय की हरियाली में अपना योगदान देता हैं सभी बच्चे ताली बजाकर उसका जन्मदिन मनाते हैं।

एलुमनाई टॉक शो

अनुराधा जैन
TGT मैथमेटिक्स
GGSS अशोक नगर

किसी भी संस्था के लिए उस के पूर्व छात्र उस संस्था के अतीत का प्रतिबिंब, वर्तमान का प्रतिनिधित्व व उसके भविष्य की झलक होते हैं। एक संस्था अपने छात्रों को सींचती है, उनका पालन पोषण करती है और इसीलिए संस्था से निकले हुए छात्रों में उस संस्था के संस्कारों की झलक मिलती है।

ये छात्र जब लौटकर अपनी संस्था में आते हैं तो मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। उनकी भागीदारी संस्थान की वृद्धि और विकास में सहायक होती है। ज्ञान, अनुभव और वित्तीय सहायता के मामले में पूर्व छात्र एक मूल्यवान संसाधन हैं। वे वर्तमान छात्रों के लिए शैक्षणिक अनुभव को समृद्ध करते हुए उद्योग सलाहकार या कार्यशाला सुविधा. कर्ता के रूप में काम कर सकते हैं।

दिल्ली शिक्षा निदेशालय अपने विद्यालय के पूर्व छात्रों को समझते हुए उन्हें यथोचित सम्मान देता है। वे छात्र जिन्होंने एक सामान्य से परिवार से निकलकर किसी भी क्षेत्र में बहुत अच्छा मुकाम हासिल किया है, वे आगामी छात्रों के लिए प्रेरणास्त्रोत हो सकते हैं। इन छात्रों के निरंतर संपर्क में रहने का भी पूरा प्रयास किया जाता रहा है। शिक्षा निदेशालय की अपनी एल्युमिनाई एसोसिएशन है जिसका लिंक निदेशालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। वेबसाइट पर छात्र स्वयं को रजिस्टर कर सकते हैं और अपने विद्यालय से जुड़ सकते हैं। सभी विद्यालय पूर्व छात्रों को विद्यालयों के सभी प्रमुख आयोजनों जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी, शिक्षक दिवस इत्यादि पर बुलाते हैं और उनका सम्मान भी करते हैं ।

जब पूर्व छात्र अपनी जीवन यात्रा और उनके खट्टे मीठे अनुभव वर्तमान छात्रों को बताते हैं, तो विद्यार्थियों को ना सिर्फ प्रेरणा मिलती है, वह समझ पाते हैं कि किस तरह से विपरित परिस्थितियों में भी सफलता हासिल की जा सकती है। वर्तमान छात्र उनके साथ स्वयं को जोड़ पाते हैं और उनका अपने संस्थान के प्रति विश्वास भी बढ़ता है।

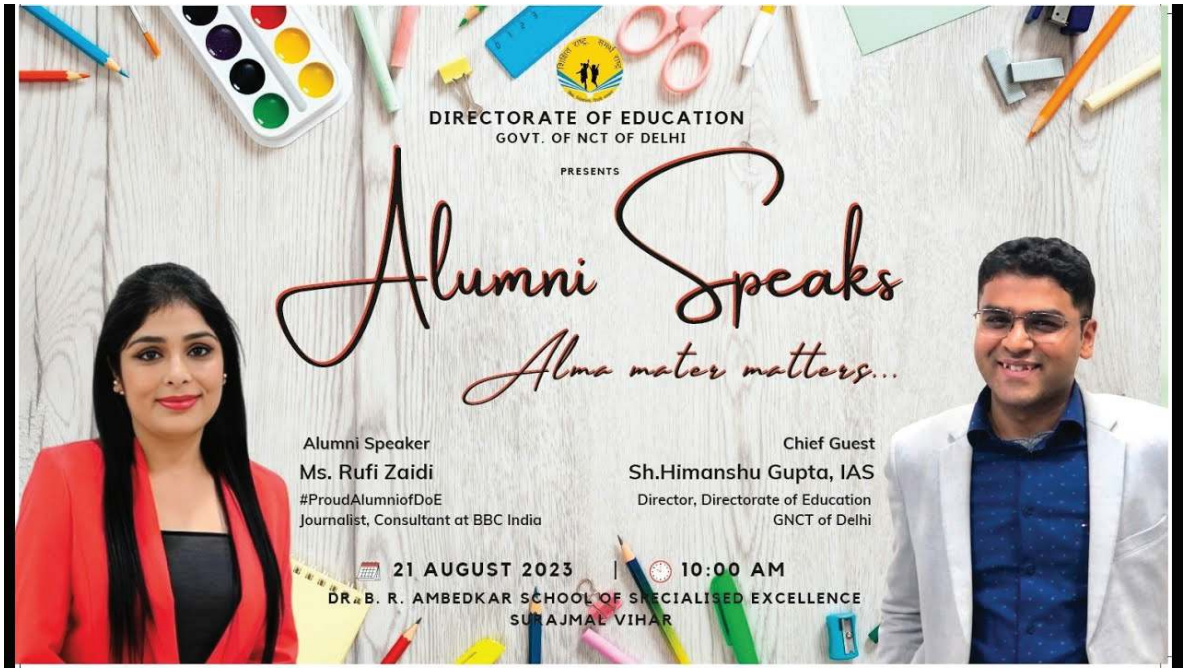

दिल्ली शिक्षा निदेशालय ने अगस्त के महीने में एल्युमिनाई एसोसिएशन को एक बड़ा मंच देने का निश्चय किया। निदेशालय ने एक नई कड़ी की शुरुआत की जिसका नाम है "एल्युमिनाई टॉक शो"।

आदरणीय शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता सर के मार्गदर्शन में एक कमिटी बनाई गई जिसमें आदरणीय DDE संजय सुभाष सर, OSD स्कूल ब्रांच पांडे सर, एल्युमिनाई इनचार्ज भावना सावनानी मुख्य रूप से शामिल थे।

सबसे पहले सभी पूर्व छात्र जो आज व्यवसायिक क्षेत्र में एक अच्छा मुकाम हासिल कर चुके हैं उनकी जानकारी गूगल फॉर्म की सहायता से हासिल की गई। हर विद्यालय को 5 सर्वश्रेष्ठ छात्रों के नाम देने थे। इस कार्य को सफल बनाने में क्षेत्रीय समन्वयक और परामर्शदाता शिक्षक ने प्रमुख भूमिका निभाई।

सभी विद्यालयों से आए हुए नामों को कार्य क्षेत्र के अनुसार बाँटा गया और शिक्षा निदेशक महोदय को दिखाया गया। महोदय ने रूफी जैदी, जो कि एक जानी मानी पत्रकार हैं, को संवाद के लिए चुना। रूफी जैदी जी का पत्रकारिता का सफर जी मीडिया ग्रुप से लगभग 8 साल पहले शुरू हुआ। आज वह बी बी सी न्यूज में कंसल्टेंट के पद पर कार्यरत हैं।

तैयारियाँ शुरू हो गईं। सबसे पहले विद्यालय प्रमुख को सूचना दी गई। विद्यालय की प्रमुख और सभी शिक्षक बहुत खुश हुए।उन्हें अपने पढ़ाए हुए विद्यार्थी पर गर्व हो रहा था। वे शिक्षक जिनका स्थानांतरण कहीं और हो गया था या जो सेवा निवृत्त हो चुके थे उन्हें भी न्यौता दिया गया। कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई।

रूफी जैदी से बात कर उनकी जीवन यात्रा पर video बनवाया गया जो कि नील कमल जी परामर्शदाता शिक्षक की आवाज़ में रिकार्ड किया गया। कार्यक्रम की सोशल मीडिया पर पब्लिसिटी का जिम्मा सुमन, रोहित उपाध्याय तथा रविंद्र कुमार ने संभाला।

इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी खूबसूरती यह थी कि यह चार स्तंभों पर आधारित था सम्मान, संवाद, संकल्प व संदेश। कार्यक्रम का उद्देश्य था अपने पूर्व छात्रों का सम्मान करना, उनके साथ संवाद करना और उस संवाद के माध्यम से छात्रों को प्रश्न पूछने का अवसर देना। इस संवाद से उनकी यात्रा की कठिनाइयाँ व प्रेरणा निकलकर आयी कि किस प्रकार सभी विद्यार्थी वह मुकाम हासिल कर सकते हैं जो उन्होंने किया है।

रूफी जैदी ने बताया कि किस प्रकार उनके स्कूल के टीचर्स ने उनको हमेशा सपोर्ट किया। उन्होंने अपने माता पिता के योगदान के विषय में भी बताया। उनकी विभिन्न विषयों की अध्यापिकाएँ भी वहाँ पर उपस्थित थीं। उन्होंने रूफी जी के स्कूल टाइम की शैतानियों, उपलब्धियों तथा फेलियर्स के बारे में भी बताया।

जब रूफी की अध्यापिका उनकी बचपन की शरारतें बता रही थीं तो सभी भावुक हो गए। उनके आशीर्वचनों ने सभी को भाव विभोर कर दिया।

रूफी जी का यह बताना कि वह नवीं कक्षा में फेल हो गई थी सभी को अचंभित कर गया कि एक बार फेल होने के बावजूद वह आज इतने अच्छे मुकाम पर हैं। इस पर रूफी जी का कहना था की फेल होना बुरा नहीं है, बस हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। अपने लक्ष्य को पाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए और इसमें अगर हमें अपने शिक्षाकों और अभिभावकों का मार्गदर्शन मिल जाता है तो हमारे लिए कोई भी लक्ष्य मुश्किल नहीं। इस बात से वर्तमान छात्राओं को हिम्मत ना हारने की प्रेरणा मिली।

रूफी जी ने यह भी नोटिस किया कि आज के समय में सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या बहुत बढ़ गई है। इसके लिए उन्होंने शिक्षा निदेशालय दिल्ली की बहुत सराहना की किया। हमारे निदेशालय द्वारा शुरू किए गए नवाचारों की वजह से पब्लिक स्कूल्स व सरकारी स्कूलों के की जो दूरी थी वह बहुत कम हो गई है।

यहाँ पर उन्होंने यह संकल्प लिया कि वो दिल्ली के सरकारी स्कूलों के उन सभी वर्तमान छात्र छात्राओं को पूरी तरह से सपोर्ट करेंगी व गाइड करेंगी जो भी पत्रकारिता के क्षेत्र में आना चाहते है। एक एल्यूमिनाई होने के नाते उन्होंने अपने विद्यालय व डिपार्टमेंट के प्रति कृतज्ञता भी व्यक्त की।

हमारे शिक्षा निदेशक श्री हिमांशु गुप्ता जी ने भी उनकी जर्नी में आए सभी चैलेंज को एकनॉलेज किया व बहुत शुभकामनाएँ दी। उन्होंने यह भी संदेश दिया। कि अगर हमारे विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे कोई भी लक्ष्य बनाते हैं तो इसमें हम सभी बच्चों को पूरी तरह सपोर्ट करने के लिए तैयार हैं।

यह इस कड़ी का पहला अंक था। एल्यूमनाई टॉक शो वास्तव में एक बहुत ही शानदार मंच है जो काफी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इस टॉक शो का मंच संचालन भावना सावनानी और नीलकमल मिश्र ने बेहद प्रभावशाली तरीके से किया। साथ ही इस कार्यक्रम का यूटयूब पर लाइव टेलीकास्ट भी किया गया जिससे हमारे हजारों लाखों विद्यार्थी अपने विद्यालयों के पूर्व छात्रों की जर्नी को सुन पाएँ और उनसे प्रेरणा ले पाए।

आगे भी हम अपने स्कूलों के होनहार बच्चों की कहानियों को सुनेंगे और उनसे प्रेरित होंगे। इसके लिए हमें इंतजार रहेगा एल्यूमिनाई टॉक शो के अगले अंक का जिसमे हमारे साथ फिर कोई पूर्व छात्र होंगे जिनका जीवन फिर हमारे लाखों बच्चों को प्रभावित करेगा।

शैक्षिक भ्रमण:
शिक्षा के क्षेत्र में जुड़ते नए आयाम

"दुनिया का अन्वेषण कर
के अनुभव हासिल करना ही अच्छी शिक्षा है"।

मीनाक्षी झा

TGT, अंग्रेजी GGSS, S U ब्लॉक पीतमपुरा

जी हाँ! दुनिया एक किताब है और जो यात्रा नहीं करता, वह इसका सिर्फ एक पन्ना पढ़ता है। यात्राएँ हमारे दृष्टिकोण का दायरा विस्तृत करती हैं। और जब बात हमारे देश भारत की हो, तो यात्रा के बिना अपने देश की विशालता और विभिन्न संस्कृतियों को समझने की बात करना बेमानी होगी। हमारे देश की सांस्कृतिक, प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सम- सामयिक विविधता की झलक यदि हमें देखनी है और इन्हें अनुभव करना है, जीना है, यहाँ के खान पान, रहन-सहन, वस्त्र-आभूषण, वन्य जीवन, पशु जीवन, कला, नृत्य संगीत, शारीरिक बनावट, जलवायु की विभिन्नता, मौसम की विविधता इत्यादि का आनंद लेना है, तो इसका एकमात्र तरीक़ा है यात्रा, यात्रा और बस यात्रा।

मेरी नज़र में तो हर भारतीय को यह अवसर ज़रूर मिलना चाहिए कि वह अपने देश के कोने कोने की यात्रा कर पाए, वहाँ के लोगों, उनकी भाषा, रीति रिवाज़, पहनावे को अच्छी तरह देख ले, जान ले, महसूस करे और उनमें अपनेपन का एहसास करे, और "वसुधैव कुटुंबकम की हमारी परंपरा को साकार करे"।

हमारा NET प्रोग्राम, इसी कड़ी को जोड़ने की दिशा में एक पहल है। हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि हमें भी अपने देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों एवं संस्कृतियों को जानने के साथ साथ, वहां की शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को देखने, तुलना करने, अंवेषण करने और विवेचन करने का अवसर मिलता है। एक शिक्षाविद् होने के नाते हमसे SCERT यह अपेक्षा करता है कि हर प्रदेश के पठन पाठन की प्रक्रिया को हम सूक्ष्मता से जाँचे, परखें और हमारे प्रदेश के शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में जो भी लाभकारी प्रयोग हैं, उन्हें अपनाएँ।

सीखने सिखाने की इसी कड़ी में, जब फरवरी माह में Vizag (विशाखापट्टनम) के विद्यालयों और वहाँ की शिक्षा व्यवस्था के नवाचारों को जानने का अवसर मिला तो मैं खुशी से उछल पड़ी।

मैं आंध्र प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे पहल को नजदीक से जानने को उत्सुक थी, साथ ही छठी या सातवीं कक्षा में हमने विक्रांत जलपोत और विशाखापट्टनम का नाम पढ़ा था तभी से मेरे मन में कई सवाल थे। अब इन सभी जिज्ञासाओं को शांत करने का समय आ गया था। यात्रा से पहले मैंने वहाँ के बारे में, वहाँ की शिक्षा व्यवस्था, सरकार के प्रयास इत्यादि के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी ले ली थी। एक तो अपने पसंद के गंतव्य स्थान की यात्रा, ऊपर से अपने चहेते मित्रों का साथ, जैसे सोने पे सुहागा! मन में बहुत कुछ सीखने की ललक और आँखों में मस्ती की चाह से भरी हमारी टोली 13 फरवरी को सुबह सवेरे एयरपोर्ट पर एकत्रित हुई।

विशाखापट्टनम पहुँचते ही जिस गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया गया, उसने तो हमारा दिल जीत लिया! यात्रा तनिक लंबी थी परंतु हम सुरक्षित अपने होटल पहुँच गए। हालाँकि शाम हो चली थी और हम काफी थक भी गए थे, पर मानो लहरें हमारी राह देख रही थी और उनके आह्वान का शोर हमारे कानों में गूँज रहा था।समुद्र तट पर तो हमें पहुँचने की देर थी बस। सागर की मचलती लहरों का स्पर्श ही इतना ताज़गी और स्फूर्ति भरा था, सबके अंदर का छिपा बचपन कूद कर बाहर आ गया और सब लगे उसका मज़ा लेने।अगले दिन से हमारे सीखने सिखाने की प्रक्रिया ज़ोरों शोरों से शुरू हो गयी। प्रति दिन हमने औसत 3-4 विद्यालयों का भ्रमण किया। वहाँ के शिक्षकों, प्राध्यापकों, प्रशासकों और बच्चों से मिले, बात चीत की, विस्तार पूर्वक उनकी व्यवस्था के बारे में जानकारी ली, अपने यहाँ के नवाचार के प्रयोगों के बारे में उन्हें बताया। उनकी भाषा से लेकर पहनावे, रहन सहन, पोशाक, खानपान इत्यादि को सूक्ष्मता से और तुलनात्मक अध्ययन किया और धरोहर के रूप में ज्ञान का भंडार और उनका ढेर सारा प्यार ले कर आये।

हमने इस यात्रा में जो सीखा उन्हें मोटे तौर पर तीन भागों में बाँटना चाहूँगी -

सरकार की पहल एवं शिक्षा संबंधी नव प्रयोग; अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति उनका असीम प्रेम और वहाँ के मित्रों की अप्रतिम मेहमान नवाजी , उनका उदात्त प्रेम, अपनापन और हृदय की विशालता। हमने अपने ट्रिप के दौरान कुल 12 विद्यालयों का भ्रमण किया जिनमें मुख्यत: चार प्रकार के विद्यालय थे, नगरपालिका के विद्यालय, ज़िला परिषद के विद्यालय, आश्रम विद्यालय और एकलव्य विद्यालय।इन विद्यालयों की अवधि 9:00 बजे से 4:00 बजे होती है। सरकार की तरफ से इन्हें कई सुविधाएं दी जाती हैं। जैसे कि प्रति विद्यार्थी सालाना ₹15000, शिक्षा के लिए आवश्यक सभी मूलभूत सुविधाएं जैसे किताब, कॉपी डिक्शनरी, पोशाक, जूते इत्यादि, हर बच्चे के लिए पौष्टिक मध्याह्न भोजन की व्यवस्था, पुस्तकों के एक पृष्ठ पर वर्णाकुलर और सामने वाले पृष्ठ पर उसीका अंग्रेजी अनुवाद ताकि बच्चे खुद भी समझ सकें। हर पुस्तक पर एक QR कोड का होना, ताकि उसकी सहायता से बच्चे उसकी SOFT कॉपी पढ़ सकें। Byjus के साथ Collaboration ताकि बच्चों को मुफ्त में टैब और अभ्यास करने के लिए E-content उपलब्ध हो पाए।

यहाँ अधिकांश विद्यार्थी जनजातीय प्रदेश के हैं जिन्हें भाषा की समस्या होती है, पर शिक्षक इस समस्या का बखूबी निवारण करते हैं, मसलन-- बच्चों को अपने पाठ्यक्रम से प्रतिदिन एक नवीन शब्द सिखाना, भाषा प्रयोगशाला में कम ऊँचाई पर आईना लगाना ताकि छोटे बच्चे भी वहाँ खड़े होकर खुद भाषण, वाद विवाद, या काव्य पाठ का अभ्यास कर सकें और उनका आत्म विश्वास बढ़ सके।

एक अन्य प्रयास है 'LEAD प्रोग्राम, जिसके तहत बोर्ड के विद्यार्थियों के लिए लक्ष्य निर्धारित 100 दिवसीय उत्साहवर्धक प्रोग्राम चलाया जाता है। नई शिक्षा नीति के अनुसार, बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार और सीखने की गति के अनुसार पढ़ाया और मूल्यांकन किया जाता है। 'BALA' के तहत विद्यालय के दीवारों को शिक्षा के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना जैसे नक्शे, राज्य राजधानी, ऐतिहासिक इमारतें, व्यक्ति, गणित के कई फॉर्मूले, विज्ञान के अनेक आलेख इत्यादि।

शिक्षकों के आध्यात्मिक एवं व्यावसायिक विकास के लिए हमारे यहाँ की तरह ही 21वीं सदी के अनुसार प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गयी है ताकि शिक्षकों और शिक्षा को आधुनिक युग के लिए अनुकूल बनाया जा सके।

यहाँ की एक और बात हमें काफी अनुकरणीय लगी जो है - बच्चों के लिए "बैग रहित दिवस" हमने भी इस नवाचार का प्रयोग करने का निश्चय किया। यहाँ का दर्शनीय " वर्ली आर्ट " भी काफी आकर्षक एवं अनुकरणीय लगी। एक अन्य चीज़ जो हम भी अपने प्राथमिक कक्षा के बच्चों के लिए करना चाहेंगे वह है - पेंटिंग द्वारा कक्षा को एक रेलगाड़ी का स्वरूप देना।

बच्चों में पर्यावरण के प्रति सम्मान संरक्षण और उत्तर दायित्व की भावना के लिए "नेशनल ग्रीन कोर" की स्थापना भी सराहनीय है। इसके तहत प्रत्येक बच्चे द्वारा अपने जन्म दिवस पर प्रिंसिपल को भेंटस्वरूप एक पौधा देना और दसवीं कक्षा तक उसकी देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी जाती है। यहाँ के लोगों का, विद्यार्थियों का अपने क्षेत्र की संस्कृति, भाषा, नृत्य, संगीत के प्रति अप्रतिम स्नेह भी अद्भुत है। ये संस्कार इनमें बचपन से ही डाल दिये जाते हैं। लगभग सभी विद्यालयों में हमें ढिमसा, भरत नाटचम देखने को मिला।

इन गरीब पिछड़े बच्चों को विद्यालय तक लाना, उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करना और शिक्षा द्वारा इनमें इतना विश्वास भर देना कि उनका लक्ष्य पूछे जाने पर एक इंजीनियर या एक वैज्ञानिक बनने की इच्छा ज़ाहिर करना, ये अविश्वस्नीय कार्य यहाँ के शिक्षक ही करते हैं। यह सब देखकर उनके प्रति सम्मान का भाव स्वतः ही जागृत हो जाता है। शायद इसी कारण इनका "Alma mater" इनके लिए इतना आदरणीय होता है। इनका सामुदायिक प्रेम और दायित्व भी सराहनीय है। हमें ऐसे ही एक नेक सज्जन से मिलवाया गया, जिन्होंने अपनी कई एकड़ भूमि अपने विद्यालय को दान में दे दिया।

इन सबके अलावा उनका सच्चा, मासूम, दिल से किया गया अतिथि सत्कार के तो क्या कहने! हमारे पास शब्द नहीं हैं कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए! हम जिस किसी विद्यालय में गए, वहाँ क्या प्रिंसिपल, क्या बच्चे क्या समुदाय के लोग! सबने पलकें बिछा कर हमारा स्वागत किया, अपने यहाँ के अनेकानेक व्यंजन खिलाये, अपने यहाँ के नृत्य संगीत से हमारा मन मोह लिया, अपनी भाषा के शब्द सिखाये और यादगार के तौर पर सबको हस्तनिर्मित लकड़ी की एक एक मूर्ति दी। अपने दिल में अपने नये दोस्तों का असीम प्यार और सम्मान लिए हुए वहाँ से वापस आ गये।

ना! ना! ना! पिक्चर अभी बाकी है दोस्तों! हम सभी ने वहाँ से सीखे नवाचारों को अपने यहाँ के विद्यालयों में प्रयोग करने का प्रण लिया। हमारे एक मेंटोर साथी ने अपने एक विद्यालय में वहाँ के मशहूर वर्ली आर्ट का प्रयोग भी किया। मैंने अपने विद्यालयों में एक नवीन शब्द प्रतिदिन सिखाने की सलाह दी है। इस प्रकार शिक्षा के आदान प्रदान से दो प्रदेशों के बच्चे, शिक्षागण और शिक्षाविद् --अनेक उपयोगी अभिगम के स्रोत से लाभन्वित हुए।

Happiness Curriculum
Facilitator's Manuals

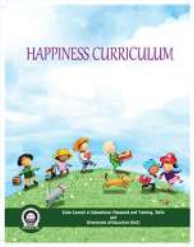

Prepared by- Rohit Upadhyaya, TGT Math's, CSA GBSSS NFC 1925005

#Delhi Govt Schools Our stories on Social Media

32 out of 76 students from Armed Forces Preparatory School have cleared the NDA exam. It was an incredible moment as the Minister of Education @AtishiAAP

The International Day of Sign Languages is celebrated in all the schools, marking the unifying power of Sign Language in Inclusion.

In partnership with @UNEnvironment we organised the Delhi Summit dialogue on Tide Turner.

Congratulations District NW B for bagging 1st position in State Level Mathematical TLM Competition.

हिमांशु गुप्ता की ओर से शिक्षा निदेशालय के लिए और लक्ष्मी स्टोर, बी-1606, शास्त्री नगर, दिल्ली-52 पर मुद्रित और शब्दार्थ , सूचना एवं प्रचार निदेशालय दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय , दिल्ली से प्रकाशित संपादक - डॉ बी. पी. पांडे

RNI Reg No. 23771/71
Magazine Post Registration Number DL(DS)-44/MP/2022-23-24

दिल्ली शिक्षा के पुराने अंक आप निरूशुल्क ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं। दिल्ली शिक्षा को ऑनलाइन पढ़ने के लिए इस लिंक पर जाएँ
https://fliphtml5-com/bookcase/jlddc"